Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

> प्रवृत्ति को छोड़ना कठिन है, परंतु प्रवृत्ति में होने वाली आसक्ति को छोड़ा जा सकता है। फिर प्रवृत्ति तुम्हारी आत्मा को मलिन बनाने वाली नहीं बनेगी।
>
> - आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 30 • 29 अप्रैल - 05 मई , 2024 | प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 27-04-2024 • पेज 12 | ₹ 10 रुपये

महावीर जयंती से अध्यात्म, अहिंसा, संयम व तप की लें प्रेरणा : आचार्यश्री महाश्रमण

जामखेड़।
21 अप्रैल, 2024

भगवान महावीर के सक्षम प्रतिनिधि परमपूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने परम प्रभु भगवान महावीर के प्रति भावांजलि प्रकट करते हुए फरमाया कि आज परमात्मा, परम वन्दनीय भगवान महावीर की जन्म जयंती-जन्म कल्याणक दिवस का अवसर, चैत्र शुक्ला त्रयोदशी का दिन है। आज से संभवतः 2622 वर्ष पूर्व एक शिशु ने राजा सिद्धार्थ के यहां रानी त्रिशला की कुक्षि से जन्म लिया था।

भगवान महावीर का जन्म ईसा पूर्व 599 और विक्रम पूर्व 542 चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हुआ था। जन्म और मृत्यु हमारी सृष्टि में चलते रहते हैं। जन्म अकेला नहीं आता, मानो वह मृत्यु को भी साथ में लेकर आता है। महावीर का जन्म हुआ और बाद में परिनिर्वाण भी हुआ। उनके 2550 वें महाप्रयाण दिवस का भी उपलक्ष्य है। महापुरुष दुनिया में आते हैं और कुछ देकर चले जाते हैं। आज भगवान महावीर सदेह रूप में हमारे सामने नहीं है, परन्तु जैन आगम हमारे पास उपलब्ध हैं। अनके ग्रन्थ, अनेक संत और अनेक पंथ हमें प्राप्त हैं। ग्राहक

बुद्धि से गुणों को पढ़ा जाये तो ग्रन्थों से कितना ज्ञान ग्रहण किया जा सकता है। संतो के उपदेश से सन्मति प्राप्त हो सकती है। कई बार अनेक पंथ एक जगह जाकर मिल जाते हैं, मंजिल एक हो जाती है। पन्थों में भेद हो सकता है, तो अभेद भी हो सकता है। भेद और अभेद हम देख सकते हैं, अनेकान्त में भेद भी है तो अभेद भी है। हमारा दृष्टिकोण अनेकान्तवादी हो जाये। दृष्टिकोण को दुराग्रह वाला न बनाकर अनाग्रह वाला बनाएं।

जैन दर्शन कहता है कि एक पदार्थ में नित्यता है उसी पदार्थ में उस समय अनित्यता भी है। दीये से लेकर आकाश तक सारे पदार्थ नित्य अनित्य दोनों हैं। आकाश द्रव्य है उसमें नित्यता की प्रधानता है, दीया पर्याय है उसमें अनित्यता की प्रधानता है।

जैन दर्शन का एक सिद्धांत है- आत्मवाद। आत्मा शाश्वत है। आत्मा पूरे लोक में फैल सकती है और संकुचित होती है तो एक कुंथु के शरीर में भी संकुचित हो सकती है। जैन दर्शन कर्मवाद को भी मानता है। कर्मों के आधार पर जीव का विश्लेषण किया जा सकता है। पुनर्जन्मवाद है, नियतिवाद है, तो पुरुषार्थवाद भी है। पुरुषार्थ एक सीमा तक हो सकता है पर नियतिवाद के लिए पुरुषार्थ को नहीं छोड़ना चाहिए।

(शेष पेज 10 पर)

अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर

प्रथम तीर्थंकर भगवान

ऋषभदेव

को वंदन नमन

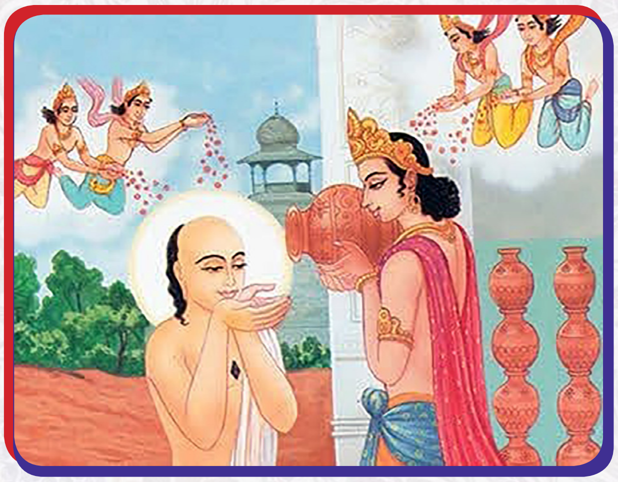

इक्षुरस से भृत सुघट, घट आ रहे उपहार में।
सूचना श्रेयांस को, तत्क्षण मिली बाजार में॥
देव! यह निरवद्य है, आहार लो, करुणा करो।
भावना का पात्र खाली, अमृत-विकिरण से भरो॥

श्रद्धावनत: अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

अध्यात्म की साधना जो भी करेगा वो तरेगा : आचार्यश्री महाश्रमण

आष्टी।
19 अप्रैल, 2024

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी आज कड़ा से आष्टी पधारे। मंगल पुरुष ने मंगल प्रवचन में फरमाया कि आदमी शांति से जीना चाहता है, शान्ति में रहना चाहता है। मन की शांति हमें अच्छी लगती है। सुविधा और शांति दो बातें होती हैं। बाह्य संसाधनों से आदमी को सुविधा मिल सकती है, परन्तु मानसिक शांति मिल ही जाए यह कहना कठिन है। भीतरी शांति के लिए साधना की आवश्यकता होती है।

साधु के पास साधना का बल है तो वह भीतर में शांति का अनुभव कर सकता है। शास्त्र में कहा गया है कि जितने भी बुद्ध-तीर्थंकर अतीत में हुए हैं और जितने

भी भविष्य में होगें उन सबका आधार शांति है। जैसे प्राणियों का आधार पृथ्वी है वैसे ही तीर्थंकर शांति पर अवस्थित होते हैं। बुद्ध होने का अर्थ केवल ज्ञान संपन्न होना है, केवल ज्ञान होने से ही तीर्थंकर बना जा सकता है। जिसका मोहनीय कर्म क्षीण हो जाये उसी व्यक्ति को केवलज्ञान, केवलदर्शन प्राप्त होता है। मोहनीय कर्म शान्ति में बाधक है, जिसने मोहनीय कर्म क्षीण कर लिया उसे भीतर की पूर्ण शांति मिल जाती है।

उन जिनों को नमस्कार किया गया है, जिन्होंने भय को जीत लिया। शांति की प्राप्ति में भय भी एक बाधा है। जहां परिग्रह है, वहां भय हो सकता है। गुस्सा भी अशांति का निमित्त बन सकता है। हमें आवेश से दूर रहना चाहिए।

चिन्ता नहीं चिन्तन करो, दिमाग को हल्का रखो। चिन्ता चिता के समान है, चिता निर्जीव को जलाती है, चिन्ता सजीव को भी जला देती है। लोभ की चेतना और अधिक लालसा से भी आदमी को बचने का प्रयास करना चाहिए। गुस्सा, लोभ, भय, चिंता इन सबसे मुक्त रहकर अध्यात्म, अपरिग्रह, अक्रोध, अभय और निश्चिंतता की साधना करने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए।

हम भगवान महावीर के जैन शासन से जुड़े हुए हैं। जैन शासन में समता, अहिंसा, संयम और तप जैसी ऊंची बातें प्राप्त हैं, हम इनको जीवन में उतारने का प्रयास करें। समता की साधना करें, इन्द्रिय संयम रखें। तप का आराधन करें तो हम शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

सोलहवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ के जप से भी शान्ति मिल सकती है। हम गहरी शांति में उतरने का प्रयास करें, हमारा कषाय क्षीण हो। अध्यात्म की साधना जो भी करेगा वो तरेगा। शास्त्र में कहा गया कि अन्य लिंगी और गृह लिंगी भी सिद्ध हो सकते हैं।

(शेष पेज 2 पर)

दुनिया में रहते हुए करें अनासक्त रहने का प्रयासः आचार्यश्री महाश्रमण

सरोला बद्दी।
15 अप्रैल, 2024

जिन शासन प्रभावक आचार्य श्री महाश्रमण जी अहमदनगर से विहार कर आनन्द धाम होते हुए विश्व भारती पधारे। पूज्यप्रवर ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि जैसे गीली मिट्टी दीवार के चिपक जाती है, वैसे ही आसक्ति का भाव होता है तो कर्म का बन्ध ज्यादा-सघन हो सकता है, और जैसे सुखी मिट्टी दीवार के नहीं चिपकती वैसे ही अनासक्ति के भाव से कोई प्रवृत्ति की जाती है तो कर्म का बन्ध सघन नहीं होता है।

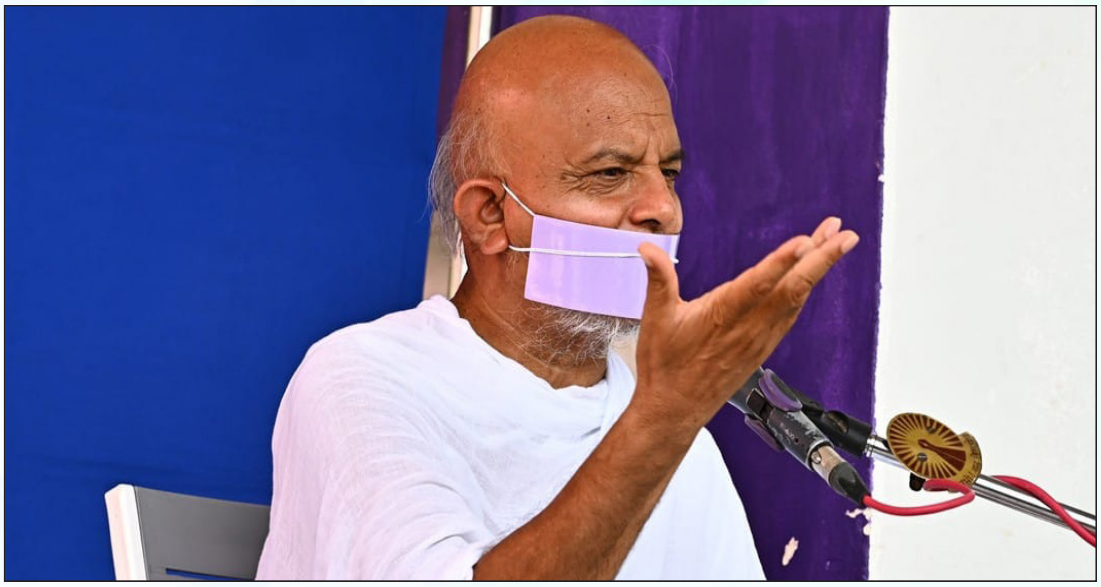

जीवन को चलाने के लिए हमें पदार्थों का भी सहयोग लेना होता है। पदार्थ हमारे काम में आते हैं। शब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श आदि अनेक रूपों में पदार्थों, पुद्गलों के साथ हमारा संपर्क होता है। सामुदायिक जीवन में कई व्यक्तियों के साथ जीना होता है। सामुदायिक जीवन की अलग व्यवस्था है, एकाकी जीवन की अपनी व्यवस्था होती है। सामुदायिक जीवन में संघर्ष आदि समस्याएं भी हो सकती हैं तो एक-दूसरे का सहयोग भी मिल सकता है।

आचार्य उमास्वाति ने तत्त्वार्थ सूत्र में बताया है- परस्परोपग्रहो जीवानाम्। जीवों का परस्पर आलंबन, सहयोग होता है। छःद्रव्यों में से पांच द्रव्य तो दूसरों को सहयोग करने वाले होते हैं पर जीव परस्पर एक दूसरे का सहयोग कर देते हैं। जैसे गाय का दूध मनुष्यों को मिलता है और मनुष्य गायों की सेवा, सुरक्षा करते हैं तो उनका भी सहयोग हो जाता है। मनुष्य एक-दूसरे का सहयोग भी करते हैं।

हम सामुदायिक रूप में रहते हैं तो हमें परस्पर सहयोग मिलता है। पदार्थ भी हमारे काम आते हैं और व्यक्ति भी हमारे काम आते हैं। मूल बात है आसक्ति और अनासक्ति की। आसक्ति पाप कर्म बन्ध का कारण है, अनासक्ति से पापकर्म का बन्ध नहीं होता।

'जे समदृष्टि जीवड़ा,
करे कुटुंब प्रतिपाल।
अन्तर दिल न्यारा रहे,
ज्यूं धाय रमावे बाल।।'

धाय माता एक बच्चे का लालन पालन करती है परंतु मन में यह स्पष्ट जानती है कि यह बच्चा मेरा नहीं है, मेरा काम तो बस इसकी सेवा करना मात्र है। इसी प्रकार सम्यक् दृष्टि व्यक्ति यह सोचे कि परिवार की सेवा-सुश्रुषा करना मेरा दायित्व है पर आखिर मैं अकेला ही हूं। दायित्व तो निभाना है पर उसमें आसक्ति का भाव नहीं होना चाहिए। जैसे पद्मपत्र पानी से अलिप्त रहता है, इसी प्रकार आदमी पदार्थों की दुनिया, समाज-परिवार में रहते हुए अनासक्त रहने का प्रयास करे। यह सोचे- मैं अकेला आया हूं, मुझे अकेला जाना है। मेरा किया हुआ कर्म मुझे ही भोगना है।

पुण्य-पाप प्रत्येक का अपना-अपना होता है। अनासक्ति से कार्य करें, नाम प्रतिष्ठा की भावना न रहे। निर्जरा में भी केवल मोक्ष की कामना रहे, भौतिक कामना होने से तपस्या का तेज भी कम हो सकता है। एक निर्जरा के सिवाय और किसी भी उद्देश्य से तपस्या नहीं करनी चाहिए। अतः सूखे गोले की तरह निष्काम, अनासक्त रहने का प्रयास करें, यह हमारे लिए हितकर हो सकता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में विश्व भारती एकेडमी की ओर से अध्यापिका वैशाली नवले, हाई स्कूल के प्रिंसिपल राज कुमार ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

बच्चे बनें श्रुत और शील संपन्न : आचार्यश्री महाश्रमण

चिंचोड़ी पाटिल।
16 अप्रैल, 2014

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्य श्री महाश्रमणजी का चिंचोड़ी पाटिल में पावन पदार्पण हुआ। मंगल देशना प्रदान कराते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि यह मनुष्य जीवन बहुत महत्वपूर्ण होता है, इसको दुर्लभ भी कहा गया है। इस मनुष्य जन्म से ही कोई प्राणी सीधा मोक्ष में जा सकता है। प्रश्न होता है इस मानव जीवन जीने का क्या लाभ है ? शास्त्र में बताया गया है कि पूर्व पाप कर्म का क्षय करने के लिए, मोक्ष प्राप्त करने के लिए इस देह को धारण करना चाहिए। दुनियां में अनेक कलाएं हैं, बहत्तर कलाओं का वर्णन प्राप्त होता है किन्तु जिसने जीने की कला नहीं सीखी उसके लिए शेष सब व्यर्थ है।

सभी कलाएं हैं विकलाएं,
पंडित सभी अपंडित हैं।
नहीं जानते कैसे जीना,
केवल महिमा मंडित है।।

बहत्तर कलाओं में कोई कुशल हो, पंडित हो गया हो, फिर भी वह अपंडित ही है, अगर सब कलाओं में श्रेष्ठ कला, धर्म की कला को वह नहीं सीखता है। मानव जीवन में धर्म का आचरण करना चाहिये। सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र धर्म है। ज्ञान सही होता है तो आचरण भी सही हो सकता है। धर्म की कला में तप को और जोड़े दिया जाये तो और निखार आ सकता है। विद्यार्थी, शिक्षक, माता-पिता और धर्म गुरु आदि सब मिलते हैं तो एक विद्यार्थी का अच्छा निर्माण हो सकता है। विद्यालय विद्या का एक मन्दिर होता है। अभिभावकों की यह आशा होती है कि हमारा बच्चा ज्ञानवान, धनवान और संस्कारवान बने। विद्यालय और शिक्षक मानो एक पीढ़ी का निर्माण कर रहे हैं, राष्ट्र निर्माण में योगदान दे रहे हैं।

राष्ट्र का भविष्य ये बालपीढ़ी होती है। बच्चे श्रुत और शील सम्पन्न बनें। कोरा ज्ञान अधूरा है, इसके साथ चरित्र जुड़ जाए तो परिपूर्णता आ सकती है। बच्चे झूठ, चोरी, गुस्से, नशे से बचकर रहें। माता-पिता भी बच्चों को अच्छे संस्कार देते रहें। शिक्षक स्वयं संस्कारी हो तो उसका प्रभाव ज्यादा अच्छा हो सकता है। गुरु कौन होता है ? जो अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर करते हैं, वो गुरु होते हैं। ज्ञान और सद्गुणों से बच्चे बड़े बनें। अच्छे संस्कार, शिक्षा कई बार बरसों तक स्मृति में रह सकते हैं।

पूज्य प्रवर ने विद्यार्थियों एवं ग्राम वासियों को सद्भावना, नैतिकता एवं नशा मुक्ति की प्रेरणा देते हुए संकल्पत्रयी स्वीकार करवाई।

पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय सरपंच शरद पवार, पंचायत समिति सभापति प्रवीण ओकाटे, स्कूल कमिटी की ओर से आबासाहब ओकाटे एवं जैन समाज की ओर से करिश्मा छाजेड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

अध्यात्म की साधना...

सिद्ध होने के लिए वीतरागता जरूरी है, केवल ज्ञान, केवल दर्शन का होना जरूरी है फिर चाहे वे किसी देश में या किसी वेश में हो। कषायों की मुक्ति ही सही अर्थ में मुक्ति है। श्रमण संघ की साध्वी नमिताजी ने पूज्यवर के स्वागत में अपनी भावना अभिव्यक्त करते हुए कहा कि कुंभ मेले में तो तन की सफाई होती है पर आज यहां आचार्य श्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में मन को पवित्र और निर्मल बनाने का मेला है। आज विश्व की महान विरल विभुति आचार्य प्रवर के दर्शन करने का लाभ प्राप्त हुआ। ब्रह्म कुमारी सुशीला जी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्य प्रवर के स्वागत में स्कूल के अध्यक्ष आमदार जीव राज ढोंढे, जैन श्रावक संघ के अध्यक्ष सुखलाल मुथा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। जैन महिला मंडल एवं प्राची बोगावत ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पृष्ठ 11 का शेष

अपने-अपने कर्त्तव्य...

सेवा लेने वाले उदारता रखें ताकि सेवा देने वालों का चित्त भी अच्छा रहे। सेवा लेने और सेवा देने वाले दोनों अपने-अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक रहे, एक-दूसरे के पूरक बन कर काम करें। व्यक्ति कर्त्तव्य के प्रति जागरूक रहे। पूज्य प्रवर के स्वागत में स्थानीय सरपंच संतोष धवले ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम

शास्त्री नगर, दिल्ली

तेरापंथ भवन में 'शासनश्री' साध्वी ललितप्रभा जी ठाणा- 3 के सान्निध्य में भगवान महावीर की जन्म जयंती बड़े उल्लास व उत्साह के साथ मनाई गयी।

साध्वीश्री ने कहा कि बीज से वटवृक्ष बनने वाली उर्ध्वारोही चेतना का नाम है भगवान महावीर। अज्ञात से ज्ञात की यात्रा में शिखर स्पर्श करने वाली पवित्र चेतना का नाम है भगवान महावीर। भगवान महावीर का अवतरण अहिंसा का अवतरण है। भगवान महावीर का अवतार अपरिग्रह समता का अवतार है। इसके साथ ही साध्वीश्री ने भगवान महावीर के करुणा प्रदर्शित करने वाले घटना प्रसंग का उल्लेख किया। साध्वी अमितश्री जी ने कहा- आयतुले पयासु अर्थात् सब जीवों को आत्मतुल्य समझें। कार्यक्रम का शुभारम्भ साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्रोच्चार द्वारा हुआ। ज्ञानशाला के कार्यकर्ताओं व प्रशिक्षिकाओं द्वारा मंगलाचरण किया गया।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों द्वारा अहिंसा व अनेकांत दर्शन पर बहुत ही रोचक नाट्य प्रस्तुति दी गयी। कन्या मण्डल ने एक्शन गीत के माध्यम से अभ्यर्थना की। महिला मण्डल द्वारा सचित्र कव्वाली से भगवान के जीवन दर्शन को प्रस्तुत किया गया। मध्य दिल्ली महिला मण्डल की उपाध्यक्षा कनक चौपड़ा, सभा की ओर से प्रवीण गोलछा, दिल्ली सभा की ओर से पवन चौपड़ा ते.यु.प. दिल्ली के उपाध्यक्ष सौरभ आंचलिया ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कर्तव्ययशा जी ने किया। कार्यक्रम के पश्चात् भाई बहिनों ने बड़े उत्साह के साथ भक्ति संध्या की प्रस्तुति दी ।

सुजानगढ़

'शासनश्री' साध्वी सुप्रभाजी एवं साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में महावीर जन्म कल्याणक दिवस सुजानगढ़ में मनाया गया। सर्वप्रथम कन्या मंडल की कन्याओं द्वारा मंगलाचरण किया गया, तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों द्वारा गीतिका का संगान किया गया। साध्वी संघप्रभा जी ने लोगों को महावीर के पथ पर चलने एवं समता का जीवन जीने की प्रेरणा दी। साध्वी मनीषाश्री जी ने भगवान महावीर का जीवन वृत्तांत बताते हुए कहा कि भगवान ने चंदनबाला के माध्यम से नारी जाति का उद्धार किया। साध्वी वृंद द्वारा गीतिका की प्रस्तुति की गई। सभा सदस्य केसरीचंद मालू एवं सरोज देवी बैद ने अपने विचार व्यक्त किए।

कन्या मंडल, युवक परिषद, ज्ञानशाला, महिला मंडल और तेरापंथ सभा के पदाधिकारियों एवं श्रावक श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन साध्वी पल्लवप्रभा जी ने किया। कार्यक्रम के पूर्व प्रभात फेरी के माध्यम से भगवान महावीर के संदेशों को जन साधारण तक पहुंचाने का प्रयास किया गया एवं कार्यक्रम के पश्चात 'ओम् ह्रीं वर्धमानाय नमः' का जप किया गया।

रिछेड़

तुलसी विहार में साध्वी परमप्रभा के सान्निध्य में 2623वां भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया गया। तेरापंथ सभा भवन से रैली की शुरुआत हुई जो गांव के मुख्य चौराहा होते हुए तुलसी विहार पहुंची। साध्वी परमप्रभा ने बताया प्रभु महावीर धर्म चक्रवर्ती बने। उन्होंने आत्मा पर विजय प्राप्त की। भगवान महावीर आज के युग को एक प्रतिबोध है कि माता-पिता को किस प्रकार सम्मान दिया जाए। जिस घर में माता पिता का ख्याल रखा जाता है उस परिवार में सदा खुशहाली बनी रहती है। साध्वी प्रेक्षाप्रभा जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी श्रेयसप्रभा जी ने 'जन्म जयंती आई रे' गीतिका का संगान किया। कन्या मंडल ने मंगल गीत प्रस्तुत किया।

महिला मंडल द्वारा सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की गई। गुणसागर धींग, डॉ. हस्तीमल मादरेचा, राधेश्याम राणा, डॉ. समन्दर शर्मा, नरेंद्र कोठारी आदि ने विचार व्यक्त किए। रिछेड़ की महिलाओं ने भगवान महावीर के जन्म कल्याणक महोत्सव पर आधारित लघु नाटिका प्रस्तुत की। इस अवसर पर चारभुजा, पडासली, मजेरा, के साथ सेवन्त्री, केलवा, अंटालीया, नरदास का गुडा आदि गांवो के श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे। संचालन हिम्मत कोठारी ने किया। सभा मंत्री मनीष धींग ने आभार व्यक्त किया।

सिटी लाइट

भगवान महावीर के 2623 वें जन्म कल्याण को तेरापंथ भवन सिटी लाइट में आचार्यश्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा सूरत के तत्वावधान में शानदार ढंग से मनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित विशाल जनमेदिनी को मुनि उदितकुमार जी ने कहा- भगवान महावीर एक अलौकिक दिव्य पुरुष थे। जिस प्रकार वचन में सर्वोत्तम सत्य वचन है, दान में सर्वोत्तम अभयदान है उसी प्रकार से संसार के सभी मनुष्यों में सर्वोत्तम ज्ञातपुत्र वर्धमान महावीर हैं। आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व का समय जातिवाद का समय था। जाति-जाति के बीच भेदभाव किया जाता था। कुछ लोगों को शुद्र यानि नीची जाति का एवं अस्पृश्य माना जाता था। उस समय दास प्रथा अस्तित्व में थी। स्त्रियों और पुरुषों को गुलाम के रूप में बेचा जाता था। ऐसे घोर अंधकार के युग में भगवान महावीर ने प्रकाश की मशाल जलाई। उन्होंने जाति प्रथा, दास प्रथा, पशु बलि की कुप्रथा आदि पर सख्त प्रहार किया। स्त्रियों को समान अधिकार दिलाने का अभियान चलाया।

मुनिश्री ने आगे कहा- भगवान महावीर ने अहिंसा, अनेकांत एवं अपरिग्रह की त्रिवेणी बहाई। उन्होंने अन्य के साथ युद्ध करने के स्थान पर स्वयं के साथ युद्ध करने की एवं अपने भीतर के क्रोध, मान, माया, अहंकार, ईर्ष्या, लोभ आदि को समाप्त करने का बोध दिया। वर्तमान में हमारे विश्व में जितनी भी समस्याएं हैं उन सभी समस्याओं का समाधान आज भी भगवान महावीर के सिद्धांतों को अपनाने से हो सकता है। मुनिश्री ने तेरापंथ भवन सिटी लाइट में आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त करने की प्रेरणा दी। पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी का आगामी चातुर्मास सूरत में है, उसे त्याग, तपस्या, ज्ञानार्जन एवं ध्यान साधना द्वारा सफल एवं ऐतिहासिक बनाने का उन्होंने आह्वान किया। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा भगवान महावीर के सिद्धांतों पर आधारित रोचक परिसंवाद की प्रस्तुति की गई। मुनि रम्यकुमार जी एवं मुनि ज्योतिर्मय कुमार जी ने भी प्रासंगिक वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा सूरत के मंत्री मुकेश बैद ने किया।

शिवकासी

मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में एवं तेरापंथी सभा के तत्वावधान में शिवकासी पेपर मर्चेंट्स एसोसिएशन हॉल में भगवान महावीर स्वामी का 2623 वाँ जन्म कल्याणक महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। सद्भावना रैली में सकल जैन एवं जैनेत्तर समाज शामिल था। मुख्य कार्यक्रम मुनि रश्मिकुमार जी के नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ हुआ। दीप्ति बैद और प्रियंका आंचलिया ने मंगलाचरण किया। सभा के वरिष्ठ श्रावक नौरत्नमल डागा ने आगंतुकों का स्वागत करते हुए कहा कि आज के इस बिखरते परिवेश में सामुदायिक चेतना के जागरण की बहुत अपेक्षा है।

तेरापंथ महिला मंडल मंत्री बेला कोठारी, सातूर से महेंद्र जैन, मदुरै तेयुप अध्यक्ष अमृत चोपड़ा, कविता आंचलिया, प्रतिभा आंचलिया आदि ने गीत एवं वक्तव्य से अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि प्रियांशु कुमार जी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष रानी बरडिया ने किया।

तिरुप्पुर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा, तिरुपुर में महावीर जयंती का कार्यक्रम बहुत ही उमंग और उत्साह के साथ मनाया गया। सभा अध्यक्ष अनिल आंचलिया एवं मंत्री मनोज कुमार भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किए। उपासिका सन्तोष आंचलिया ने भगवान महावीर के जीवन दर्शन को प्रस्तुत किया।

ज्ञानशाला के बच्चों ने भगवान महावीर के बारे में बहुत ही सुंदर प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया। शशिकला बैद और ऋषभ आंचलिया ने सुंदर गीतिका का संगान किया। श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन जितेंद्र भंसाली ने किया।

ईड़वा

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी कमल प्रभाजी के सान्निध्य में ईड़वा में महावीर जयंती कार्यक्रम बड़े उत्साह के साथ आयोजित हुआ। यद्यपि ईड़वा में श्रद्धा के परिवार कम हैं, परंतु जैनेतर लोगों ने पूरे जोश व उत्साह के साथ रैली, कार्यक्रम व सामूहिक एकासन में भाग लिया।

साध्वी कमलप्रभाजी ने फरमाया कि भगवान अनन्त शक्ति संपन्न थे। उन्होंने अपनी शक्ति को उजागर किया। वे इंसान के रूप में इस धरती पर आये और भगवान बनकर धरा से प्रस्थान किया। उन्होंने अहिंसा, अनेकान्त और अपरिग्रह जैसे तत्त्व दुनिया को दिये। हम केवल भगवान के गुणगान व जयगान ही न करें, अपितु उनके संदेशों को जीवन में उतारें।

साध्वी जगतयशाजी ने कविता के माध्यम से व साध्वी शताब्दीप्रभाजी ने वक्तव्य के माध्यम से अपने उद्‌गार व्यक्त किए। छोटी खाटु सभाध्यक्ष ताराचंद धारीवाल, ईड़वा महिला मंडल व कन्या मंडल, खाटु महिला मंडल, डेगाना महिला मंडल, मनीष सुराणा, ताराचंद कोठारी, मोक्षा जैन व साध्वीवृंद ने सुमधुर गीतिका के माध्यम से अपने आराध्य को भावांजलि अर्पित की।

छोटे-छोटे जैनेतर बच्चों ने रोचक संवाद के माध्यम से सत्य की महिमा को उजागर किया। इस अवसर पर आस-पास के लगभग 9 क्षेत्रों के लोग उपस्थित थे। अतिथियों का स्वागत जुगराज सुराणा व आभार ज्ञापन विनीत सुराणा ने किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वी प्रियदर्शनाजी एवं कुशल संचालन साध्वी आरोग्ययशाजी ने किया।

तेरापंथ महिला मंडल के विविध आयोजन

शिवकाशी

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार शिवकाशी तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में कैंसर अवेयरनेस कार्यक्रम मुनि रश्मिकुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री के नमस्कार महामंत्र से हुई। इस कार्यक्रम की मुख्य वक्ता डॉ. आरती का स्वागत महिला मंडल की अध्यक्ष रानी बरडिया ने किया। डॉ. आरती ने उपस्थित सभी श्रोताओं को जागरूक करते हुए ब्रेस्ट कैंसर व सर्वाइकल कैंसर के कारण और बचाव के उपाय बताए। शिवकाशी महिला मंडल की वरिष्ठ श्राविका पूर्व अध्यक्ष सम्पत देवी डागा ने कैंसर पर जीत की कहानी अपनी जुबानी के तहत सुनाए अपने अनुभव। सकारात्मक सोच और परिवार का सहयोग इस जीत में अहम योगदान रखता है। मुनि रश्मिकुमार जी ने कहा कि हमें अपने भाव हमेशा शुद्ध रखने चाहिए। भाव का शरीर पर बहुत असर पड़ता है। मुनिश्री ने कहा आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी हमेशा कहा करते थे कि गांठ हमारे मन में द्वेष के भाव से उत्पन्न होती है और कैंसर की गांठ तो एक ही जन्म तक रहती है द्वेष की गांठ जन्मों-जन्मों तक पीछा नहीं छोड़ती। इसलिए भावना हमेशा अच्छी रखनी चाहिए। अंत में मंत्री बेला कोठारी ने आभार व्यक्त किया।

हैदराबाद

तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद के अंतर्गत तेरापंथ कन्या मंडल हैदराबाद द्वारा स्पीच कॉन्टेस्ट का आयोजन किया गया। 'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की मंगल शुरुआत हुई। श्रमण भगवान महावीर और आचार्यश्री महाश्रमण जी में समानताएं विषय पर भाषण प्रतियोगिता में 9 कन्याओं ने भाग लिया। जिनमें प्रथम स्थान लवीशा जैन, छवि बैद, द्वितीय स्थान महक डागा, तृतीय स्थान पर जीविका बैद रही। निर्णायक के रूप में अंजु बैद व मंजु दुगड़ ने सभी कन्याओं के भाव, भाषा, उच्चारण की प्रस्तुति देखकर निर्णय दिया। अंजु बैद ने जैन धर्म और तेरापंथ की मान्यताएं बताई एवं वक्तृत्व कला के गुर सिखाए। 'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी ने कन्याओं को सीता जैसी सहनशील बनने की शिक्षा दी। साध्वी अमितरेखा जी ने कन्याओं को गुरुदेव के कई प्रेरक घटनाओं के प्रसंग बताए। कन्या मंडल सह-प्रभारी रेखा संकलेचा ने मंच संचालन करते हुए आगामी कार्यक्रम चित्रकला एवं आर्ट एक्जीबिशन की जानकारी दी। टीटीएफ के राष्ट्रीय प्रभारी मनीष पटवारी, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के सचेतक एवं किशोर मंडल के पर्यवेक्षक अभिनंदन नाहटा, पूर्व तेलंगाना आगम प्रभारी लक्ष्मीपत डुंगरवाल, हैदराबाद महिला मंडल की कोषाध्यक्ष अल्पना दुगड़ एवं सह-मंत्री प्रेम संचेती आदि ने प्रतियोगिता में भाग लेने वाली कन्याओं को पुरस्कार प्रदान किया। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा, महिला मंडल, युवक परिषद् एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के सदस्य भी उपस्थित थे। आभार ज्ञापन प्रेम संचेती ने किया।

कोयंबटूर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल कोयंबटूर एवं सृजन एसोसिएशन संस्था के तत्वावधान में 'पौध को सींचे' कार्यक्रम के अंतगर्त 'पेनिक एंड पीस' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के मुख्य वक्ता कवि डॉ आदित्य शुक्ल थे। कार्यक्रम की शुरुआत मंडल की बहिनों ने मंगलाचरण के द्वारा की। सृजन संस्था के अध्यक्ष गोपाल माहेश्वरी ने आगंतुकों का स्वागत किया। मधु चौरडिया ने मुख्य वक्ता का परिचय दिया तथा तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष मंजू सेठिया व सृजन संस्था के अध्यक्ष गोपाल माहेश्वरी ने उनका सम्मान किया। मुख्य वक्ता ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग के पश्चात अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया एवं बहिनों की कई जिज्ञासाओं का निवारण किया। धन्यवाद ज्ञापन गुलाब मेहता ने किया। इस कार्यक्रम में भाई-बहनों व कन्याओं की अच्छी उपस्थित रही। इस कार्यक्रम का कुशल संचालन तेरापंथ महिला मंडल की सह मंत्री ममता पुगलिया ने किया।

मदुरै

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वधान में तेरापंथ महिला मंडल मदुरै द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में गुड पेरेंटिंग विषय पर कार्यशाला रखी गई। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल की बहिनों ने प्रेरणा गीत से की। साप्ताहिक सामायिक एवं नारीलोक के वाचन के पश्चात् कार्यक्रम की मुख्य वक्ता सेजल कोठारी ने बहुत सुंदर तरीके से समझाया कि बच्चों के विकास में माता-पिता की बहुत महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। माता का दोहरा कर्तव्य होता है, मां बच्चों की पहली गुरु होती है। आज के दौर में छोटी उम्र में ही बच्चे कंपटीशन से गिरे हुए हैं। परिस्थिति और मन की स्थिति ये जीवन निर्माण के बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्से हैं। महाप्राण ध्वनि बच्चों के विकास के लिए बहुत उपयोगी है। धन्यवाद ज्ञापन सोना चोपड़ा ने एवं कुशल संचालन मंत्री सुनीता कोठारी ने किया।

भीलवाड़ा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल भीलवाड़ा द्वारा संगठन यात्रा के क्रम में भीलवाड़ा की शास्त्री नगर, नागौरी गार्डन एवं आसपास की कॉलोनी के साथ यात्रा का शुभ आगाज महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल में हुआ। मंडल की बहिनों ने नवकार महामंत्र उच्चारण एवं प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया। महिला मंडल अध्यक्षा मैना कांठेड़ ने उपस्थित बहिनों को मंडल की आध्यात्मिक गतिविधियों से जुड़कर स्वयं के साथ संघ विकास की प्रेरणा दी। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल कार्यसमिति सदस्या उषा सिसोदिया ने बहिनों को घर परिवार के साथ समाज हित में कार्य करने हेतु प्रेरित किया। संगठन मंत्री सुमन दुगड़ ने अधिक से अधिक बहिनों को मंडल से जुड़ने का आह्वान किया। मंत्री अमिता बाबेल ने मंडल की परियोजनाओं की जानकारी दी। शास्त्री नगर कॉलोनी की सक्रिय प्रभारी बहिनों का सराहनीय सहयोग रहा।

आंचलिक कार्यशाला 'मेरा परिवार, मेरी जिम्मेदारी' का आयोजन

उधना।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल, उधना द्वारा दक्षिण गुजरात स्तरीय आंचलिक कार्यशाला 'मेरा परिवार, मेरी जिम्मेदारी' का आयोजन बहुश्रुत परिषद् सदस्य मुनि उदितकुमार जी के मंगल सान्निध्य में एवं अभातेमम राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा की अध्यक्षता में तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व महापौर - सूरत शहर हेमाली बोधवाला एवं मुख्य वक्ता के रूप में मोटिवेशनल स्पीकर एवं लाइफ कोच प्रज्ञा दुगड़ की उपस्थिति रही। सर्व प्रथम मुनिश्री के नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत से मंगलाचरण का संगान किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा की अध्यक्षता में कार्यशाला के लोगो का अनावरण किया गया। महिला मंडल उधना अध्यक्ष सोनू बाफना द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। पूर्व अध्यक्षा पुष्पा बैद द्वारा साध्वी प्रमुखाश्री जी का संदेश वाचन किया गया। मुख्य अतिथि हेमाली जी बोधवाला ने वक्तव्य देते हुए कहा कि पारिवारिक एकता और सामंजस्य व्यक्ति को आगे बढ़ने में सहायक बनते हैं। स्थानीय सभा मंत्री सुरेश चपलोत एवं तेयुप अध्यक्ष हेमंत डांगी द्वारा शुभकामनाएं दी गई। कार्यशाला गीत का संगान महिला मंडल की पदाधिकारी एवम कार्यकारिणी बहनों द्वारा किया गया। गुजरात प्रभारी श्रेया बाफना एवम ट्रस्टी कनक बरमेचा ने अपना वक्तव्य दिया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा ने कार्यशाला विषय पर वक्तव्य देते हुए कहा कि महिलाओं को परिवार को प्राथमिकता देते हुए सामाजिक जिम्मेदारियों को भी निभाना चाहिए। परिवार की जिम्मेदारियों निभाते हुए, स्वयं का विकास भी करना चाहिए ।

मुनि ज्योतिर्मय कुमारजी ने अपने वक्तव्य में कहा की परिवार में छोटे को बड़े की बात सुननी चाहिए अगर छोटे, बड़े की आज्ञा का पालन करेंगे तो परिवार में परस्पर एकता का माहौल रहेगा। मुनि उदित कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा- परिवार से जुड़ा हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी को अच्छे से समझता है, अंतर केवल इतना सा होता है कि उस जिम्मेदारी का निर्वहन उचित रूप में नहीं कर पाता। समन्वय एवं स्वार्थ त्याग से ही परिवार में समरसता रह सकती है। मुनिश्री ने पारिवारिक जिम्मेदारी के निर्वहन के संदर्भ में मार्गदर्शन प्रदान किया। तत्पश्चात कन्या मंडल की बेटियों द्वारा विषय पर एक रोचक प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रज्ञा दुगड़ द्वारा बहुत ही प्रेरणादायी वक्तव्य दिया गया। कार्यक्रम के दूसरे चरण में अभातेमम सहमंत्री निधि सेखानी द्वारा जागरूकता अभियान फॉर्म की विशेष जानकारी एवं प्रेरणा दी गई।

कार्यशाला में संभागी सभी क्षेत्र के साथ समीक्षा एवं समाधान का सत्र रहा। संभागी क्षेत्रों की टीम को अभातेमम द्वारा संभागी प्रमाण पत्र दिए गए। कार्यशाला में दक्षिण गुजरात के आसपास के क्षेत्र उधना, सूरत, पर्वत पाटिया, लिंबायत, सचिन, किम, चलथान, बारडोली, कामरेज, अंकलेश्वर-भरूच, बड़ौदा, नवसारी, चिखली, डूंगरी, वलसाड, वापी, एवं सेलवास लगभग 16 क्षेत्रों से तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने भाग लिया। कार्यशाला के प्रथम चरण का संचालन नीलम डांगी एवं द्वितीय चरण का संचालन उपाध्यक्षा महिमा चोरड़िया ने किया तथा आभार ज्ञापन महिला मंडल पूर्व अध्यक्ष सुनीता कुकड़ा ने किया।

संक्षिप्त खबर

पौध को सींचे कार्यशाला का आयोजन

अररिया कोर्ट। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित 'पौध को सींचे' के अंतर्गत 'गुड पेरेंटिंग' कार्यशाला तेरापंथ महिला मंडल अररिया कोर्ट की बहिनों द्वारा आयोजित की गई। अध्यक्ष सरिता बेगवानी ने कहा कि बदलते समय के साथ अभिभावक को बदलना चाहिए। रिश्तों में मिठास लाने का प्रयास करना चाहिए ताकि बच्चों का सम्पूर्ण विकास हो सके। ब्यूटी बेगवानी, अंजू बाठिया ने अपने-अपने वक्तव्य रखे। सभी बहनों ने कार्यक्रम की भूरी-भूरी प्रशंसा की। साथ ही भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर बहनों द्वारा जाप भी किया गया। रात्रि में भाईयों और बहनों का सामूहिक धम्मजागरण का कार्यक्रम रखा गया।

हैप्पी फैमिली वर्कशॉप

राउरकेला। स्थानीय तेरापंथ भवन में समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी, समणी करुणाप्रज्ञा जी, समणी सुमनप्रज्ञा जी के सान्निध्य में हैप्पी फेमिली वर्कशॉप का आयोजन किया गया। समणी जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से वर्कशॉप की शुरुआत हुई। समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी ने कहा जहाँ सब प्रेम भाव के साथ रहते हैं, जहां रिश्तों में मधुरता होती है, जहां लोग आपस में एक दूसरे से वाद-संवाद करते हैं, अपने मन की बात करते हैं, और जहां सब एक दूसरे की रक्षा करते हैं वो होता है परिवार।

समणी करुणाप्रज्ञा जी ने कहा कि परिवार में सबको अपनी-अपनी जिम्मेदारी का एहसास होना चाहिए। जब हमारे पास परिवार होता है तब हम रिश्तों की कदर नहीं करते पर जब हम अपने परिवार से दूर होते हैं तब हमें उनकी कमी का एहसास होता है। समणी सुमनप्रज्ञा जी ने वर्कशॉप का संचालन किया। वर्कशॉप में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने वालों को पुरस्कार दिए गए। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष मिलन डोसी ने सम्यक् दर्शन कार्यशाला के प्रमाणपत्र वितरित किए।

आचार्य हंसरत्न सूरी के 180 दिन की तपस्या के पारणे में पहुंचे उग्र विहारी

वरली-मुम्बई। मूर्ति पूजक सम्प्रदाय के आचार्य हंसरत्न सूरी जी के 180 दिन की तपस्या का पारणा किया गया। वे 160 दिन की तपस्या में ससंघ उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी को पारणे पर पधारने का निमंत्रण देने पधारे। मुनिश्री उनके विनम्र निवेदन को स्वीकार कर अपने सहयोगी संतों सहित कार्यक्रम में पधारे। मुनिश्री को देखते ही आचार्य वर ने सम्मुख पधारकर मुनिश्री को वंदना की। मुनिश्री ने उस समय कविताओं का संगान किया जिनको सुनकर आचार्यश्री ही नहीं उपस्थित अनेक आचार्य और संत गण भी प्रसन्न हुए।

मुनिश्री ने कहा कि 53 वर्ष के संयम जीवन में प्रथम बार इतने बड़े तपस्वी के तप अनुमोदन का अवसर आया है और इतनी बड़ी संख्या में प्रथम बार गच्छाधिपति, आचार्य, पन्यास, साधु, साध्वियों से मिलन हुआ है। उपस्थित आचार्यों ने कहा इस मुख वस्त्रिका को देखकर पूछना नहीं पड़ता कि आप कौन से सम्प्रदाय और किनके शिष्य हैं दूर से ही पता लग जाता है कि ये तेरापंथी और आचार्यश्री महाश्रमणजी के शिष्य हैं। परंतु हमें देखकर लोगों को पूछना पड़ता है कि आप कौन से गच्छ के और किनके शिष्य हैं। लगभग 150 साधु और 200 साध्वियों की उस विशाल उपस्थिति में चार संत तेरापंथ धर्म संघ से थे। इस प्रकार के कार्यों से जैन एकता के साथ धर्मसंघ की सहज प्रभावना होती है। कार्यक्रम वरली डोम में हुआ जिसमें हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नामकरण संस्कार

■ **हैदराबाद।** सुजानगढ़ निवासी हैदराबाद प्रवासी राजीव एवं लता के सुपुत्र वरुण एवं पुत्रवधु प्रीति के सुपुत्र के नामकरण कार्यक्रम का आयोजन जैन संस्कार विधि से करवाया गया। कार्यक्रम में परिषद से ललित जैन ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष निर्मल दुगड़ ने नवजात शिशु के प्रति मंगलकामना एवं शुभकामना संप्रेषित की।

नूतन गृह प्रवेश

■ **सूरत।** सायरा निवासी सूरत प्रवासी जोधराज कावड़िया के सुपुत्र इंद्रप्रकाश कावड़िया का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक कांतिभाई मेहता, गौतमचंद वेदमुथा, नरेन्द्र भंसाली ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

■ **सूरत।** छापर निवासी सूरत प्रवासी अरविंद दुधेड़िया का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक बजरंग बैद, सतीश संकलेचा ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **सूरत।** वाव निवासी सूरत प्रवासी नवीनभाई, जयंतीभाई मेहता का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, कांतिभाई मेहता, मीठालाल भोगर, विशाल पारीख ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया। संस्कारकों की प्रेरणा से अपने सामर्थ्य अनुसार सभी ने अच्छी संख्या में त्याग प्रत्याख्यान किए।

नूतन प्रतिष्ठान

■ **सूरत।** सूरत प्रवासी ऋषि वेदमुथा के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीषकुमार मालू ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया। संस्कारक की प्रेरणा से सभी ने अपने सामर्थ्य अनुसार त्याग प्रत्याख्यान किया।

नववर्ष पर हुआ विशिष्ट मंत्र साधना का प्रयोग

स्तोत्र मंत्र साधना से व्यक्ति बनता है शक्ति सम्पन्न

चेन्नई/ सुंगाछत्रम्।

भारतीय नववर्ष विक्रम संवत 2081 के शुभारम्भ के अवसर पर आध्यात्मिक मंत्र साधना का आयोजन आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या डॉ. गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में संचेती सदन, सुंगाछत्रम् में आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र के समुच्चारण के साथ भक्तामर स्तोत्र इत्यादि अनेकों आध्यात्मिक मंत्रों का उच्चारण किया गया। प्रातःकाल सैकड़ों साधक सामायिक की साधना से जुड़े। पुरुष, महिलाएं, ज्ञानाशाला के बच्चे और कन्या मण्डल गणवेश में उपस्थित थे। स्थानीय लोगों के साथ चेन्नई, कांचीपुरम इत्यादि अनेकों क्षेत्रों के श्रावकों ने सहभागिता दर्ज की। तन्मयता, एकाग्रता से सभी ने अपने आप को मंत्र साधना से भावित किया। लगभग एक घण्टे तक चले मंत्र साधना के बाद साध्वीश्री ने साधकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज जो मंत्र साधना हुई, वह साल में मात्र तीन-चार बार ही सामूहिक रूप में की जाती है। हर व्यक्ति चाहता है कि मैं शक्ति सम्पन्न बनूं। जैन धर्म प्राचीनतम धर्म है। तीर्थंकरों ने स्वयं साधना कर श्रावक समाज को भी साधना सम्पन्न बनने की प्रेरणा दी। जैनागमों में अनेकों मंत्रों का समावेश है, जो अनेकों बाधा विपदाओं को मिटाने के साथ नवीन ऊर्जा का संचार करता है।

साध्वीश्री ने कहा कि श्रावक समाज को नेम और फेम की बनिस्पत संघ और संघपति की सेवा में सलग्न बनना चाहिए। साध्वी मंयकप्रभा जी ने कहा कि थीटा, बीटा आध्यात्मिक मंत्र साधना से अल्फा तरंगों में परिवर्तित हो जाते हैं, प्रमाद, निन्दा, कुरूतियां दूर हो जाती हैं। साध्वी दक्षप्रभा ने 'नये साल में हमें नया इतिहास रचना है' - कविता के माध्यम से विचार व्यक्त किए। स्थानीय महिला शक्ति ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। कन्या मण्डल की गीतिका एवं नन्ही बालिका प्रिंयल संचेती की तुतलाती बोली सभी को आकर्षक लगी। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा, वर्षा संचेती ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। विशाल संचेती ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी मेरुप्रभाजी ने किया।

संबोधि

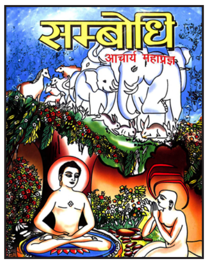

साध्य-साधन-संज्ञान

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

आत्मा इस संसार में अनंतकाल से भ्रमण करती है। उसे अपने स्वरूप का ज्ञान नहीं हुआ। यह अज्ञान ही सारे क्लेशों की जड़ है। मोह कर्म का जब उपशम या क्षयोपशम होता है तब आत्मा को अपना बोध होता है।

अपने में उसकी श्रद्धा बढ़ जाती है। क्षय अवस्था में वह बोध चिरस्थायी बन जाता है, अन्यथा अज्ञान की फिर भी संभावना बनी रहती है। वह संदेहशील बन जाता है। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जिन्हें कभी आत्म-बोध का अवसर ही नहीं मिलता। वे सदा मोह से आवृत रहते हैं। इसी आधार पर व्यक्तियों के चार विभाग किए गए हैं-

१. श्रद्धालु और संदिग्ध

आचार्य आषाढ़भूमि चातुर्मास के लिए अपने सौ शिष्यों के साथ उज्जयिनी आये। चातुर्मास चल रहा था। लोग धर्म रस का रसास्वाद कर रहे थे। अकस्मात् नगर में महामारी का प्रकोप हो गया। अनेक लोग काल-कवलित होने लगे। महामारी की मार से आचार्य का शिष्य परिवार भी वंचित नहीं रहा। एक-एक कर निन्यानवे साधु उसकी चपेट में आ गये। आचार्य ने सबको समाधिस्थ रहने का मंत्र देते हुए कहा– 'मरना सबको है। उसकी मृत्यु नहीं है जिसने स्वयं को जान लिया है। यह अवसर है, अपने मन को स्वयं में योजित करो।' सबके सब शिष्य समाधि-मृत्यु को प्राप्त हुए। आचार्य ने एक-एक कर सबको कहा था– एक बार स्वर्ग से पुनः लौटकर आना। किंतु आश्चर्य की बात है, कोई नहीं आया। छोटा शिष्य जो अंत में विदा हुआ था, वह भी नहीं आया। तब आचार्य की आस्था का आधारभूत भवन प्रकंपित हो गया। उन्होंने सोचा न स्वर्ग है और न नरक। ये सब झूठ हैं। साधु जीवन को छोड़कर आचार्य आषाढ़भूति ने अपना मुख पुनः संसार की ओर कर लिया।

जैसे ही आचार्य साधु जीवन का त्यागकर निकले कि उस छोटे शिष्य का (देव आत्मा का) आसन प्रकंपित हुआ। उसने अपने ज्ञान से जाना कि आचार्य विदा हो गए हैं। वह आया उसने मार्ग में एक नाटक रचा। आचार्य उसे देखने में व्यस्त हो गए। नाटक पूरा हुआ, आगे बढ़े। कुछ छोटे-छोटे छह बच्चे वन्दना करने सामने आये। गहनों से लदे थे। आचार्य के मन में लोभ जागा। उन्होंने छहों बच्चों को मारकर गहनों से झोली भर ली। आगे कुछ बढ़े ही थे कि इतने में अनेक लोग सामने आ गए। भोजन के लिए लोगों ने हठ किया। आचार्य के इंकार करने पर भी लोग जबरदस्ती से झोली पकड़ कर उसमें भोजन डालने लगे। जब पात्र में गहनों को देखा तो लोग अवाक् रह गए। किसी ने कहा– यह मेरे लड़के का है और किसी ने कहा– यह मेरे लड़के का। लोग धिक्कारने लगे। मन ही मन कहने लगे– भगवन्! यह क्या? इतने में शिष्य ने सब माया समेटी और बोला- आंखें खोलो गुरुवर! आपका शिष्य सामने खड़ा है। आंखें खोली। न कोई आदमी, न गांव। पूछा- क्या बात है? देव ने कहा- यह सब मैंने किया था। देर हो गयी मेरे आने में। आप समझें, स्वर्ग है, देव है, नरक है। गुरु आश्वस्त हो गए। उन्होंने अपने को साधना पथ पर पुनः अधिरूढ़ कर जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया।

२. संदिग्ध और श्रद्धालु

भवदेव और भावदेव दो भाई थे। भवदेव बड़े थे। माता के विशुद्ध संस्कारों से संस्कारित होकर वे यौवन में साधक–संत हो गए। भावदेव जवान हुए। विवाह हुआ। पत्नी को लेकर आ रहे थे। मार्ग में भवदेव के दर्शन हुए। भाई ने नश्वरता का बोध-पाठ दिया। थोड़े से जीवन को वासना की अग्नि में भस्मसात् करना क्या उचित है? मन तो नवोढ़ा में था, किंतु भाई से संकोचवश कुछ बोले नहीं। संन्यास ले लिया। मन बार-बार पत्नी का स्मरण करता है। वे सोचते हैं-भाई की मृत्यु हो जाये तो घर जाऊं। भाई आत्मसमाधि पूर्वक मरण को प्राप्त हुए और उधर भावदेव घर की ओर चल पड़े। गांव के बाहर आकर उपाश्रय में ठहरे। लोगों से पूछा अपनी मां श्राविका रेवती के लिए। लोगों ने कहा- उसका स्वर्गवास हो गया। फिर अपनी पत्नी नागला के लिए पूछा। संयोग की बात थी कि जिसे पूछ रहे थे वह नागला ही थी। नागला समझ गई कि मुनि का मन अस्थिर है। वे घर आना चाहते हैं। उन्हें प्रतिबोध देना चाहिए। उसने कहा- 'मुनिवर! वह अपनी 'सास' जैसी दृढ धर्मात्मा है, तत्वज्ञा है और शीलधर्म से सुशोभित है।' मुनि ने कहा- 'मैं यह नहीं पूछता। मैं तो पूछता हूं, वह है तो सही।' उत्तर देकर वह चली गयी। एक-दो बहिनों को लेकर वह वहां पुनः चली आयी, वंदन किया और सामायिक लेकर बैठ गयी।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

असंग्रह का वातायन : अभय का उच्छ्वास

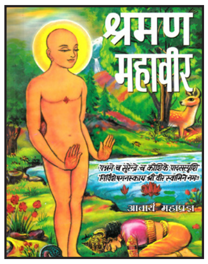

गाएं अरण्य में चरने को आने लगीं। घास अभी बढ़ी नहीं थी। भूमि अभी अंकुरित ही हुई थी। सुधातुर गाएं घास की टोह में आश्रम की झोपड़ी तक पहुंच जाती थीं। अन्य सभी तापस अपनी-अपनी झोपड़ी की रक्षा करते थे। गाएं उस झोपड़ी पर लपकतीं, जिसमें महावीर ठहरे हुए थे। वे उसके छप्पर की घास खा जाती हैं, तापस ने कुलपति से निवेदन किया-मेरी झोंपडी के छप्पर की घास गाएँ खा जाती हैं। मेरे अनुरोध करने पर भी महावीर उसकी रक्षा नहीं करते। अब मुझे क्या करना चाहिए?' उसके मन में रोष और संकोच–दोनों थे।

कुलपति अवसर देख महावीर के पास आया और बड़ी धृति के साथ बोला, 'मुनिवर! निम्नस्तर की चेतना वाला एक पक्षी भी अपने नीड़ की रक्षा करता है। मुझे आश्चर्य है कि आप क्षत्रिय होकर अपने आश्रम की रक्षा के प्रति उदासीन हैं। क्या मैं आशा करूं कि भविष्य में मुझे फिर किसी तापस के मुंह से यह शिकायत सुनने को नहीं मिलेगी?'

महावीर ने केवल इतना-सा कहा, 'आप आश्वस्त रहिए। अब आप तक कोई उलाहना नहीं आएगा।'

कुलपति प्रसन्नता के साथ अपने कुटीर में चला गया।

महावीर ने सोचा, **'अभी मैं सत्य की खोज में खोया रहता हूं। मैं अपने ध्यान को उससे हटाकर झोपड़ी की रक्षा में केन्द्रित करूं, यह मेरे लिए सम्भव नहीं होगा। झोपड़ी की घास गाएं खा जाती हैं यह तापसों के लिए प्रीतिकर नहीं होगा। इस स्थिति में यहां रहना क्या मेरे लिए श्रेयस्कर है?'**

इस अश्रेयस् की अनुभूति के साथ-साथ उनके पैर गतिमान हो गए। उन्होंने वर्षावास के पन्द्रह दिन आश्रम में बिताए, शेष समय अस्थिकग्राम के पार्श्ववर्ती शूलपाणि यक्ष के मन्दिर में बिताया।

आश्रम की घटना ने महावीर के स्वतंत्रता-अभियान की दिशा में कुछ नए आयाम खोल दिये। उनके तत्कालीन संकल्पों से यह तथ्य अभिव्यंजित होता है। उन्होंने आश्रम से प्रस्थान कर पांच संकल्प किए-

१. मैं अप्रीतिकर स्थान में नहीं रहूंगा।

२. प्रायः ध्यान में लीन रहूंगा।

३. प्रायः मौन रहूंगा।

४. हाथ में भोजन करूंगा।

५. गृहस्थों का अभिवादन नहीं करूंगा।'

अन्तर्जगत् के प्रवेश का सिंहद्वार उद्घाटित हो गया। लौकिक मानदण्डों का भय उनकी स्वतंत्रता की उपलब्धि में बाधक नहीं रहा। अब शरीर उपकरण और संस्कारों की सुरक्षा के लिए उठने वाला भय का आक्रमण निर्वीर्य हो गया।

भय की तमिस्त्रा अभय का आलोक

भगवान् महावीर साधना के पथ पर निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। उनका आत्मबल प्रबल और पुरुषार्थ प्रदीप्त हो रहा है। उनका पथ विघ्नों और बाधाओं से भरा है। तीखे-तीखे कांटे चुभन पैदा कर रहे हैं किन्तु वे एक क्षण के लिए भी उनसे संत्रस्त नहीं हैं।

१. साधना का पहला वर्ष चल रहा है। महावीर का आज का ध्यान-स्थल अस्थिकग्राम है। वे शूलपाणि यक्ष के मन्दिर में ध्यान मुद्रा के लिए उपस्थित हैं। गांव के लोगों का मन भय से आकुल है। पुजारी भी भयभीत है। उन सबने कहा, 'मुनिवर! आप गांव में चलिए। यह भय का स्थान है। यहां रहना ठीक नहीं है। शूलपाणि यक्ष बहुत क्रूर है। जो आदमी रात को यहां ठहरता है, वह प्रातः मरा हुआ मिलता है।'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

संकल्प का प्रयोग

भाव-अभिग्रह- हंसता हुआ, रोता हुआ, बेड़ियों से बंधा हुआ– इस प्रकार का दाता मुझे भिक्षा देगा तो ग्रहण करूंगा, अन्यथा नहीं।

इस संदर्भ में भगवान महावीर का वह दुष्फल अभिग्रह मननीय है। साधनाकाल के बारहवें वर्ष में भगवान ने संकल्प किया- "मैं दासी बनी हुई राजकुमारी के हाथ से ही भिक्षा लूंगा, जिसका सिर मुंडा हुआ हो, हाथ-पैरों में बेड़ियां हों, तीन दिन की भूखी हो और आंखों में आंसू हों जो देहली के बीच में खड़ी हों और जिसके सामने सूप के कोने में उबले हुए थोड़े से उड़द पड़े हों आदि।"

महावीर भिक्षा के लिए जाते, पर भिक्षा लिये बिना ही लौट आते। पांच महीने और पच्चीस दिन निकल गए। छब्बीसवें दिन उनका अभिग्रह फला, उन्होंने चन्दना के हाथ से भिक्षा ग्रहण की।

प्रयोजन

यह तप आशा, लालसा को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है। विभिन्न प्रयोगों से अपने मन और शरीर को साधा जाता है।

भगवती व्याख्याप्रज्ञप्ति के पच्चीसवें शतक में उत्क्षिप्त, निक्षिप्त आदि अनेक प्रकार के अभिग्रहों का उल्लेख है।

भिक्षा के सिवाय भी अभिग्रह का प्रयोग किया जाता है। अनेक तपस्वी लोग भी अभिग्रह करते हैं। अमुक स्थिति निष्पन्न होने पर ही मैं पारणा करूंगा, अन्यथा नहीं। साधना के अन्य विभिन्न अनुष्ठानों में भी यह प्रयुक्त हो सकता है।

राजा अध्यात्म साधना का प्रयोग कर रहा था। उसने अभिग्रह किया कि मैं तब तक साधना करता रहूंगा जब तक यह दीया जलता रहेगा। कुछ समय बाद दीया बुझने की स्थिति में आ रहा था कि दासी ने सोचा दीया बुझ न जाए, उसने उसमें और तेल डाल दिया। राजा ने अपनी साधना जारी रखी। फिर जब दीया बुझने लगा, दासी ने पुनः उसमें तेल डाल दिया। इस प्रकार दासी तेल डालती गई और राजा की साधना लम्बायमान होती गई।

संकल्प-शक्ति के विकास के अनेक प्रयोग हैं। उनमें अभिग्रह को भी एक माना जा सकता है। जीवन की विषम परिस्थितियों में भी कुछ अभिग्रह स्वीकार कर लिए जाते हैं तो उनसे संकट निवारण और चेतना-जागरण दोनों को बहुधा प्राप्त किया जा सकता है।

स्वाद-विजय का प्रयोग

अध्यात्म-साधना का केन्द्रीय तत्त्व है अनासक्ति। जिस व्यक्ति में अनासक्ति का जितना विकास होता है, वह उतना ही आध्यात्मिक बन जाता है। यदि आसक्ति क्षीण हो जाती है तो फिर क्रोध, मान और माया टिक नहीं सकते। आसक्ति का संबंध लोभ कषाय से है।

अध्यात्म के बाधक तत्त्वों का प्रतिनिधित्व करने वाला एक शब्द है कषाय। उसे दो शब्दों के द्वारा अभिव्यक्ति दी जाए तो वे होंगे– राग और द्वेष। उसे चार शब्दों में विश्लेषित किया जाए तो वे होंगे क्रोध, मान, माया और लोभ। इनमें प्रधान लोभ है। यह दसवें गुणस्थान तक बना रहता है। कध, मान और माया नवें गुणस्थान में ही सर्वथा उपशान्त या क्षीण हो जाते हैं। इसका निष्कर्ष यह है कि लोभ सबसे अधिक दुर्जय है।

मोहनीय कर्म को आठ कर्मों में राजा कहा जाता है। इसी प्रकार मोहनीय कर्म की विभिन्न कृतियों में लोभ को राजा कहा जा सकता है। उसे मोह-परिवार का मुखिया भी कहा जा सकता है। क्रोध और मान द्वेष के तथा माया और लोभ-राग के अंगभूत हैं। देष राग का उपजीवी होता है। राग के बिना वह हो ही नहीं सकता। इसलिए रागविजय पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना अपेक्षित होता है।

राग-विजय और आसक्ति-विजय के अनेक प्रकार हैं। जितने आसक्ति के प्रकार हैं, उतने ही आसक्ति-विजय के प्रकार हैं। संक्षेप में आसक्ति के पांच प्रकार हैं- शब्द आसक्ति, रूप आसक्ति, गंध-आसक्ति, रस-आसक्ति और स्पर्श-आसक्ति। इन्द्रिय विषयों का सर्वथा अप्रयोग संभव नहीं है। किन्तु उनमें आसक्ति का न होना साधक का लक्ष्य होता है।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री भारीमालजी युग

मुनिश्री भैरजी (देवगढ़) दीक्षा क्रमांक : 79

मुनिश्री बड़े त्यागी एवं तपस्वी थे। आपने उपवास से लेकर बाईस तक लड़ीबद्ध तप किया। अनेक बार मासखमण तथा उदक व आछ के आगार से दो मासी, अढाई मासी और तीन मासी तप किया। तेईस चातुर्मासों में एकान्तर किये। शीतकाल में शीत सहन किया और उष्णकाल में आतापना ली।

– साभार: शासन समुद्र –

अप्रैल 2024
सप्ताह के विशेष दिन

6 मई	भगवान अनंतनाथ जन्म कल्याणक
7 मई	भगवान अनंतनाथ दीक्षा एवं केवलज्ञान भगवान कुन्थुनाथ जन्म कल्याणक
8 मई	पक्खी
10 मई	अक्षय तृतीया (वर्षीतप समापन)
11 मई	भगवान अभिनन्दन च्यवन कल्याणक

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस **abtyptt@gmail.com** पर ही भेजें।

निवेदक
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
29 अप्रैल - 05 मई , 2024

भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर विभिन्न आयोजन

शिवकासी

तेरापंथ सभा के तत्वावधान में मुनि रश्मिकुमार जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री ने नमस्कार महामंत्र से की। मुनिश्री ने आचार्य श्री भिक्षु एवं श्री राम की समानताओं का उल्लेख किया। शिवकासी तेरापंथ सभा के पूर्व अध्यक्ष व तेरापंथ सभा के वरिष्ठ श्रावक नौरत्नमल डागा ने अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल की अध्यक्ष रानी बरडिया ने स्वामीजी पर कविता सुनाई। उक्त जानकारी तेरापंथ महिला मंडल मंत्री बेला कोठारी ने दी।

चिदम्बरम-तमिलनाडु

तमिलनाडु के चिदम्बरम शहर के श्री महावीर जैन भवन में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में 'रामनवमी एवं 265वां भिक्षु' अभिनिष्क्रमण दिवस का आयोजन हुआ। मुनि दीपकुमार जी ने कहा- श्रीराम भारतीय संस्कृति के आदर्श पुरुष हैं।

जनता में जितना पूजनीय नाम श्रीराम का है उतना अन्य महापुरुषों का कम दिखाई देता है। श्रीराम का दृष्टिकोण सम्यक् था। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों को भी अनुकूल रूप में ग्रहण किया था। उनके जीवन में वनवास का प्रसंग बहुत ही रोमांचकारी है। मुनिश्री ने आगे कहा- आचार्यश्री भिक्षु क्रान्तिकारी महापुरुष थे। उन्होंने विचार क्रान्ति को माध्यम बनाकर आचार क्रांति की थी। उनके जीवन में बहुत कष्ट आए पर उनका समभाव खंडित नहीं हुआ। 5 वर्ष तक पूरा आहार-पानी भी उपलब्ध नहीं हुआ तो भी वे घबराएं नहीं। वे महावीर वाणी के प्रति पूर्ण समर्पित थे। उनमें सिद्धांतनिष्ठा की भावना थी। मुनि काव्यकुमार जी ने कहा- आचार्य भिक्षु में धैर्य की शक्ति थी। प्रतिकूलताओं में भी उनका धैर्य डगमगाया नहीं।

पूर्वांचल कोलकाता

मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में 265 वां भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस समारोह पूर्वक श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (कलकता पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित धर्म सभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा जैन धर्म का धार्मिक संगठन है- तेरापंथ। तेरापंथ के संस्थापक आचार्य भिक्षु एक सत्य-संधायक एवं सिद्धान्त निष्ठ आचार्य थे। उनका जीवन अनुत्तर था। वे मारवाड़ के धोरी, अलबेले योगी व सिद्ध पुरुष थे। वे प्रकृति से सहज, सरल और विनम्र थे।

आचार्य भिक्षु मारवाड़ के कंटालिया में जन्में, बगड़ी में संयम स्वीकार किया और बगड़ी में ही उन्होंने अपने गुरु रघुनाथ जी से सत्य के खातिर अभिनिष्क्रमण किया। पांच वर्ष तक पूरा आहार नहीं मिला अनेक कष्टों को सहन किया, अभाव में जीए, फिर भी सत्य साधना में मजबूती थी। मुनिश्री ने आगे कहा- आचार्य भिक्षु की वाणी कबीर की तरह चोट करने वाली थी। वे प्रारंभ से ही नैसर्गिक प्रतिभा के धनी थे, मनोवैज्ञानिक थे। साध्वाचार में सजग थे। उनके जीवन में श्रम की मसाल अंत तक जलती रही। आज रामनवमी भी है भगवान राम आदर्श पुरुष थे। उनके जीवन में सहजता, सरलता थी। मुनि कुणालकुमार जी के गीत से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष हनुमान माल दुगड़, तेरापंथ महासभा के पूर्व अध्यक्ष राजकरण सिरोहिया, तेरापंथ सभा कोलकाता के अध्यक्ष अजय भंसाली वरिष्ठ उपासक सुरेन्द्र सेठिया ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

मदुरै

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथ भवन में आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस कार्यक्रम उपासक नैनमल कोठारी एवं धनराज लोढ़ा की उपस्थिति में रखा गया। ॐ भिक्षु के जाप एवं सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। महिला मंडल मंत्री सुनीता कोठारी एवं निवर्तमान मंत्री दीपिका फुलफगर ने मंगलाचरण किया। उपासक नैनमल कोठारी एवं धनराज लोढ़ा ने आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर प्रकाश डाला। तेरापंथी सभा अध्यक्ष अशोक जीरावला, तेयुप अध्यक्ष अमृतलाल चोपड़ा आदि ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का कुशल संचालन अध्यक्ष अशोक जीरावला ने किया। सभा मंत्री अभिनन्दन बागरेचा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

पौध को सींचे कार्यशाला का आयोजन

जसोल।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वाधान में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा मुनि हर्षलालजी आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में सरक्षिका फेनादेवी भंसाली की अध्यक्षता में 'पौध को सींचे' कार्यशाला का आयोजन किया गया।

मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। महिला मंडल द्वारा प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया गया। संरक्षिका फेनादेवी भंसाली ने अध्यक्षता करते हुए आए हुए मुख्य वक्ता अमृतलाल बुरड़ का स्वागत करते हुए बताया कि अमृतलाल बुरड़ नवकार विद्या मंदिर बालोतरा के वाइस प्रिंसिपल के रूप में सेवाएं दे रहे हैं। मुख्य वक्ता अमृतलाल बुरड़ ने कहा कि बच्चा एक पौधे की तरह होता है। जैसे एक पौधे को बड़ा करने के लिए समय-समय पर हवा, पानी, अच्छी खाद और देख-रेख की आवश्यकता होती है वैसे ही एक बच्चे को भी माता-पिता के प्यार, दुलार, केयर की जरूरत पड़ती है। पिता से ज्यादा मां की ज्यादा सार संभाल की जिम्मेदारी होती है। परीक्षा के समय बच्चे से ज्यादा मां टेंशन लेती है। ऐसे समय में माता टेंशन न लेते हुए खुद का खयाल रखे, स्ट्रेस न ले, बच्चे को ज्यादा पढ़ाई का प्रेशर न दे, जो बच्चे को सरल लगे वो अच्छे से पढ़े, दूसरे बच्चे से ज्यादा नंबर लाने के लिए जोर न दे, तुलना ना करे। खाने, पीने एवं पूरी नींद का, स्वास्थ्य का ध्यान रखे।

मुनि यशवंत कुमारजी ने सबसे पहले स्मृति विकास के लिए 'महाप्राण ध्वनि' का प्रयोग करवाया। तत्पश्चात एक कहानी के माध्यम से समझाया कि हमें एक बच्चे की तरह सोचकर उसके नजरिए को समझना चाहिए। बच्चे को विषय उदाहरण से, प्रयोगों से सिखाएं। समझकर सीखा ज्ञान ज्यादा अच्छे से टिकता है।

बच्चे पर किसी भी बात का ज्यादा जोर ना डाले। उसका मन कोमल होता है, माता-पिता की सोच के अनुसार खरे न उतरने पर कई गलत कदम उठा लेते हैं। इसलिए अपने बच्चे के साथ एक दोस्त बनकर, तनाव रहित होकर, खुश रहे। नकारात्मक सोच को हावी न होने दें, प्रसन्न रहें, पॉजिटिव रहें। उनकी कमियों को छोड़ कर विशेषताओं को बताकर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। कार्यशाला का संचालन मंत्री अरुणा डोसी ने किया। आभार ज्ञापन पूर्व मंत्री ममता मेहता ने किया।

अणुव्रत समिति द्वारा चुनाव शुद्धि अभियान

गाजियाबाद।

अणुव्रत विश्व भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर की अध्यक्षता में अणुव्रत समिति गाजियाबाद चुनाव शुद्धि अभियान के तहत नुक्कड़ नाटक आयोजन किया। जिसमें महामंत्री भीखम चंद सुराणा, संगठन मंत्री डॉ कुसुम लूनिया, (सूर्यनगर) निगम पार्षद कृष्ण (शशि) खेमका (संरक्षक, अणुव्रत समिति, गाजियाबाद) की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ उपाध्यक्ष शरद वार्ष्णेय ने बड़ी बेखूबी से किया। अणुव्रत समिति गाजियाबाद की अध्यक्षा कुसुम सुराणा ने राष्ट्रीय अध्यक्ष के सहज ही आगमन पर अपनी असीम खुशी जाहिर करते हुए सभी का हार्दिक स्वागत किया। सभी पदाधिकारी ने चुनाव शुद्धि अभियान पर अपने प्रभावक विचार रखें।

दीपिका नाहटा और उनकी टीम ने चुनाव शुद्धि अभियान पर बहुत शानदार नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति दी। जिसे सभी ने खूब सराहा। सभी अतिथियों का आभार ज्ञापन वीरेन्द्र जैन ने किया।

पृष्ठ 11 का शेष

भगवान महावीर के...

आज पता चल रहा है, वो चक्रवर्ती कोई और नहीं हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ही हैं।

उपाध्याय मुनि रविन्द्र कुमार जी ने कहा - भगवान महावीर का जीवन-दर्शन युगों-युगों से हमारा मार्गदर्शन कर रहा है, एवं करता रहेगा। आज की हर समस्या का समाधान महावीर वाणी में हैं। भगवान महावीर के सिद्धान्तों को आत्मसात कर लें तो पर्यावरण की समस्या एवं ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याओं को समाहित कर सकते है।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने कहा- भगवान महावीर का जन्म एक व्यक्ति का जन्म नहीं सृष्टि के समस्त सद्गुणों का जन्म है। मानवता के महामंगल का जन्म है। जातिवाद एवं दासप्रथा के अंधकार को दूर करने वाले महासूर्य का जन्म है।

भगवान महावीर ने कहा- एका माणुस्स जाई। मानव मात्र का कल्याण, उत्थान विकास होना चाहिए। ऐसी ऊंची सोच के धनी हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हैं। उन्होंने जी 20 में टेगलाईन दी- वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्युचर। हमारे गौरवशाली प्रधानमंत्री सचमुच राजर्षि के तुल्य हैं।

साध्वी सुलक्षणा जी ने कहा, भगवान महावीर ने वैभव से वैराग्य की और प्रस्थान किया। भगवान महावीर ने नारी सशक्तिकरण पर बल दिया। उन्होंने चन्दनबाला को साध्वी समाज की प्रमुखा बनाकर नारी को सम्मान दिया। यही काम हमारे माननीय प्रधानमंत्री कर रहे हैं। इस कार्यक्रम में तेरापंथ समाज के भाई, बहनों ने मंगल संगान कर प्रधानमंत्री सहित विशाल जनमेदिनी को मंत्रमुग्ध कर दिया। स्कूली बच्चों द्वारा भगवान महावीर पर नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई।

इस अवसर पर परम श्रद्धास्पद पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमणजी का संदेश भी स्क्रीन पर दिखाया व सुनाया गया। इस कार्यक्रम की सफलता में दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया एवं वरिष्ठ श्रावक के. एल. जैन आदि श्रावकों का सराहनीय श्रम रहा। महावीर मेमोरियल समिति के अध्यक्ष के. एल. जैन ने प्रधानमंत्री का सम्मान किया।

इस कार्यक्रम में महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया, अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा, अणुव्रत विश्व भारती अध्यक्ष अविनाश नाहर, महासभा के महामंत्री विनोद बैद आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
29 अप्रैल - 05 मई, 2024

आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति सूरत का दायित्व संकल्प समारोह

सूरत।

आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति सूरत का दायित्व संकल्प समारोह मुनि उदितकुमार जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस के पुनीत दिवस पर सिटीलाइट तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ।

इस अवसर पर मुनि उदितकुमार जी ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा- आज का दिवस आचार्य भिक्षु के साधना के संकल्प का पुनीत दिवस है। पूज्यप्रवर का 2024 का चातुर्मास होने की नियति बनी। इस नियति के प्रमुख कारक है- पूज्यप्रवर की असीम अनुकंपा व सूरत समाज की श्रद्धासिक्त प्रार्थना व प्रभावी प्रस्तुति। नियति बनी तो भगवान महावीर कॉलेज भी स्थान के रूप में प्राप्त हो गया। कारवां बना और चातुर्मास को ऐतिहासिक बनाने हेतु उत्साह, लगन, समर्पण, समय के कुशल प्रबंधन के साथ आगे बढ़ रहा है। मुनिश्री ने आगे कहा- पद की आकांक्षा न हो बल्कि कार्य करने की लगन हो।

व्यवस्था समिति अध्यक्ष संजय सुराणा का यह प्रयास रहा कि संपूर्ण सूरत के प्रतिभावान कार्यकर्ता सभी कार्यों से जुड़ें, पूज्यप्रवर की रास्ते की सेवा करें और पूज्यप्रवर की अभिवंदना अधिकाधिक तपस्या से करें।

आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति सूरत के अध्यक्ष संजय सुराणा ने अपनी टीम की घोषणा की व सभी को दायित्व संकल्प ग्रहण करवाए। इससे पूर्व तेरापंथी महासभा के संगठन मंत्री प्रकाश डाकलिया द्वारा मंगलाचरण गीत का संगान किया गया।

तेरापंथ ट्रस्ट सूरत के को-मैनेजिंग ट्रस्टी अनिल बोथरा, सूरत सभा मंत्री मुकेश बैद, भगवान महावीर कॉलेज के संस्थापक व स्वागताध्यक्ष डॉ. संजय जैन, जसकरण चौपड़ा आदि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। सूरत चातुर्मास हेतु पूज्यप्रवर के पदार्पण के संदर्भ में अभ्यर्थना गीत का लॉन्च किया गया। तेयुप सूरत द्वारा विहार सेवा हेतु निर्मित टी शर्ट का अनावरण किया गया। व्यवस्था समिति के महामंत्री नानालाल राठौड़ ने समारोह का संचालन किया। आभार ज्ञापन समिति के उपाध्यक्ष अनिल चंडालिया ने किया।

ज्ञानशाला सत्र शुभारंभ समारोह

शालीमार।

'शासनश्री' साध्वी रतनश्रीजी के सान्निध्य में गोयल भवन, शालीमार बाग में ज्ञानशाला का सत्र शभारंभ समारोह समायोजित किया गया। 'शासनश्री' साध्वी सुव्रतांजी ने ज्ञानार्थियों को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा- कि मूल ऐसा कोई अक्षर नहीं है जिसका मंत्र में प्रयोग न हो।

ऐसी कोई वनस्पति नहीं है जिसका औषधि में प्रयोग न हो। ऐसा कोई बच्चा नहीं है जो कुछ बनने लायक न हो। परंतु निर्माण करने वाला मिलना अति दुर्लभ है। ये बच्चे हमारे समाज के कर्णधार बनने वाले हैं, भाग्यविधाना बनने वाले हैं, पर अपेक्षा है कुशल निर्माताओं की।

ज्ञानशाला के संयोजक व्यवस्थापक एवं प्रशिक्षक यह प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। बच्चे भी एकाग्रता पूर्वक पढ़ रहे हैं। जीवन निर्माण के लिए स्कूली शिक्षा अपर्याप्त है।

ज्ञानशालाओं के द्वारा यह कार्य सुचारू रूप से हो रहा है। 'शासनश्री' साध्वी सुमन प्रभाजी ने अपनी वक्तव्य में कहा- आचार्यश्री तुलसी एक दूरद्रष्टा आचार्य थे, जिन्होंने परिवार, समाज व राष्ट्र निर्माण के लिए अनेक आयाम दिये।

अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान आदि आयामों के साथ बच्चों को संस्कारी बनाने के लिए ज्ञानशाला का उपक्रम दिया। ज्ञानशाला एक ऐसा कारखाना है वहां बच्चों के जीवन का निर्माण किया जाता है। इस कारखाना से निर्मित होकर निकलने वाले बच्चे अलग ही दिखाई देते हैं। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं के मंगला चरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

शालीमार बाग, सभाध्यक्ष सज्जन देवी गिड़िया, महिला मंडल उत्तर मध्य दिल्ली की अध्यक्षा मधु सेठिया, दिल्ली ज्ञानशाला परामर्शक रतनलाल जैन, शालीमार बाग ज्ञानशाला व्यवस्थापक सुरेन्द्र जैन, युवक परिषद् उपाध्यक्ष सौरभ आंचलिया ने अपने विचार व्यक्त किये।

सह व्यवस्थापक नीरज जैन ने आभार ज्ञापन किया। मुख्य प्रशिक्षिका कान्ता जैन ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

'छूना है आसमान' कार्यक्रम का आयोजन

अमराईवाड़ी।

तेरापंथ युवक परिषद अमराईवाड़ी द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'छूना है आसमान' का सफल आयोजन संत भवन अमराईवाड़ी में किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के द्वारा की गई। स्वागत वक्तव्य तेयुप अध्यक्ष हितेश चपलोत ने दिया। श्री महावीर जैन युवा संघ के चेयरमैन विनोद चपलोत ने भी सभी का स्वागत किया।

कार्यक्रम में पधारे मोटिवेशनल स्पीकर सीपीएस राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी का परिचय निर्मल ओस्तवाल ने दिया। स्पीकर दिनेश मरोठी ने विषय प्रस्तुति देते हुए बहुत ही शानदार तरीके से परिवार में रिश्ते, व्यवसाय में प्रगति एवं समाज से सफलता के बारे में बहुत ही सरल भाषा मे समझाया। कार्यक्रम में पधारे सीपीएस राष्ट्रीय सहप्रभारी सोनू डागा ने गीतिका के साथ अपनी प्रस्तुति दी। परिषद् द्वारा स्पीकर दिनेश मरोठी का सम्मान किया गया।

प्रतिभागियों ने अपने विचार व्यक्त किये। आभार ज्ञापन तेयुप संगठन मंत्री मयंक गेलड़ा ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुकेश सिंघवी ने किया। कार्यक्रम में लगभग 70 सदस्यों की उपस्थिति रही।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा

वर्ष 2024 हेतु नवीन घोषित चातुर्मास

मुनि तत्त्वरुचि जी : जयपुर

संक्षिप्त खबर

अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान पर हुई चर्चा

चेन्नई/ कडलूर। दक्षिण तमिलनाडु के कडलूर जिले के चुनाव आयोग की सहायक निर्देशक अनंत नायगी ने शहर के चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन मन्दिर में विराजित मुनि दीपकुमार जी के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। अनंत नायगी का जैन धर्म के प्रति विशेष अनुराग है। जब उनको जानकारी प्राप्त हुई तो स्वयं मुनिवृन्द के दर्शनार्थ पहुंची।

मुनि दीपकुमार जी ने कहा कि जैनाचार्य गुरुदेव श्री तुलसी ने भारतवर्ष की स्वतंत्रता के बाद जनता में नैतिक, चारित्रिक मूल्यों के विकास को लेकर अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया, उसके 75 वर्ष पूर्ण हो गए हैं। अणुव्रत चुनावों में भी नैतिकता, प्रामाणिकता के विकास के लिए आह्वान करता है। अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के अन्तर्गत अणुव्रत कार्यकर्ता जन प्रतिनिधियों और जनता को जागृत करने का प्रयास करते हैं। इस अवसर पर शोभागमल सांड, शांतिलाल मेहता, कुशाल सांड उपस्थित रहे।

अणुव्रत चुनाव शुद्धि बुकलेट किया गया वितरित

चेन्नई। अणुविभा के तत्वावधान में देश भर में चल रहे 'अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान' के अन्तर्गत अणुव्रत समिति, चेन्नई द्वारा लोकसभा चुनावों में नैतिकता, प्रामाणिकता रहे इस हेतु प्रचार प्रसार किया जा रहा है। इसी के अन्तर्गत तमिलनाडु सरकार के मंत्री पी के शेखर बाबू को अणुव्रत चुनाव शुद्धि बुकलेट व पेम्पलेट भेंट किये गए । अणुविभा की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा माला कातरेला ने तमिल भाषा में अणुव्रत अवदान की गतिविधियों से अवगत कराया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित आंचलिया पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सेवा कार्य संपादित

बेहाला। महावीर जयंती के उपलक्ष पर तेरापंथ युवक परिषद बेहाला के युवकों ने वृद्ध आश्रम शांति निवास में सेवा कार्य संपादित किया गया।

राजाजीनगर। भगवान महावीर जन्म कल्याणक के अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा सेवा के अंतर्गत नेहरूनगर, शेषाद्रीपुरम स्थित दी कर्नाटक वेलफेयर एसोसिएशन फॉर ब्लाइंड में सेवा कार्य संपादित हुआ।

कैसे कहलायी अक्षय तृतीया

● मुनि कमल कुमार ●

अक्षय तृतीया जैन धर्म का प्रमुख त्योंहार है। इस दिन भगवान ऋषभदेव ने तेरह महिने दस दिन की घोर तपस्या का पारणा अपने प्रपोत्र श्रेयांस कुमार के हाथों से इक्षु रस से किया। तब से ही वैशाख शुक्ला तीज को लोग बहुत महत्त्व देने लग गये। सांसारिक लोग अपने मांगलिक कार्य दुकान, मकान, संस्थान का मुहूर्त्त ही नहीं, विवाह, सगाई के लिए भी इस दिन को उपयुक्त मानने लग गये और इस दिन को अपूछ मुहूर्त अपूछ सावा भी कहने लग गये।

भगवान ऋषभ इस अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर थे, इसलिये आदिनाथ नाम से भी जाने जाते हैं। भगवान ऋषभ नाभि राजा मरूदेवा माता के सुपुत्र थे उनका जन्म अयोध्या नगरी में हुआ था। आपके दो पत्नियां थी सुनंदा और सुमंगला। आपका परिवार बहुत विशाल था। आपने सभी को जन्म के साथ जीवन जीने की कला सिखाई उसी का ही सुपरिणाम मानता हूं कि परिवार में दीक्षित होने वालों की संख्या भी भरपूर थी। ज्येष्ठ पुत्र भरत को राज्य देकर ऋषभ दीक्षित हुए। ऋषभ की दीक्षा के बारे में सुनकर तीन हजार लोग और तैयार हो गये, इस प्रकार दीक्षित होने वालों की एक साथ संख्या बढ़ गई। परंतु लोगों को जानकारी नहीं थी कि साधुओं को आहार कैसे बहराया जाये? साधु के लिए क्या कल्पनीय है क्या अकल्पनीय है? इसका बोध नहीं होने के कारण जब ऋषभ भिक्षा के लिए जाते तो लोग उन्हें हाथी, घोड़े, रत्न आदि उपहार करते परंतु ऋषभ इसे अकल्पनीय समझ कर आगे बढ़ जाते।

ऋषभ ने दीक्षा के साथ ही मौन साधना प्रारंभ कर दी, लोगों को आहार की जानकारी नहीं थी और इतने बड़े राजा होकर ऋषि बने, इसलिए लोग रोटी, सब्जी जैसी साधारण पदार्थों की मनुहार भी नहीं करते थे। ऋषभ पैदल ही भ्रमण करते इसलिए लोग अपने शिक्षित हाथी घोड़े की इसलिये मनुहार करते कि बाबा को पैदल नहीं चलना पड़े। परंतु ऋषभ आहार-पानी नहीं मिलने पर भी कभी कम्पायमान नहीं हुए, निरंतर साधना में आगे बढ़ते रहे। परंतु ऋषभ के साथ दीक्षित होने वाले तीन हजार साधु आहार-पानी के अभाव में विचलित हो गये। कोई जटाधारी बन गया, कोई कंदमूल भक्षण करने लग गया। इस प्रकार तब से ही अनेक मत-मतांतर हो गये। परंतु ऋषभ अपने संकल्प पर अडौल रहे, उन्हें आठों कर्मों का बोध था। उन्होंने सोचा यह मेरे द्वारा ही बांधा हुआ अन्तराय कर्म है जैसे ही यह दूर होगा तब सब कुछ उपलब्ध हो जाएगा।

भगवान ऋषभ के जन्म से पूर्व कल्पवृक्षों के सहारे लोग अपना जीवन यापन करते थे वृक्ष के फलों का सेवन कर लेते, उदर पूर्ति कर लेते। वृक्ष की छाल से शरीर की सुरक्षा कर लेते परंतु जब वृक्षों ने फल देने बंद कर दिये। लोगों के सामने उदर पूर्ति की समस्या आई तब ऋषभ ने ही उन्हें खेती का प्रबोध दिया, फसल तैयार होने पर उसे काटने और अनाज को प्राप्त करने के लिए उन्हें प्रशिक्षण दिया। बैल भी अपनी भूख मिटाने के लिये उसे खाने लग गये, लोगों ने सोचा अगर सारा पशु ही चर जाएंगे तो हमारा काम कैसे चलेगा। ऋषभ ने समस्या का समाधान देते हुए कहा कि पशुओं के मुंह पर छींकी बांध दी जाये जिससे समस्या मिट जाएगी। लोगों ने वैसा ही किया, सबके मन में अनाज को प्राप्त कर खुशी हुई, परंतु बैलों की छींकी खोलना भूल गये, भूख प्यास से आकुल बैल छटपटाने लगे। लोगों ने देखा बैल न चारा खा रहें हैं ना पानी पी रहे हैं। ऋषभ के पास आकर अपनी समस्या रखी तब ऋषभ ने कहा कि उनकी छींकी खोली क्या? लोगों ने कहा वह तो नहीं खोली ऋषभ ने कहा छींकी खोले बिना चारा कैसे चरेंगे? लोग अपने स्थान पर आये और छींकी खोलते ही बैल पूर्ववत् चरने लग गये। उस समस्या का अन्तराय काल ऐसा बंधा कि भगवान ऋषभ को भी तेरह महिना दस दिन घर-घर घूमने पर भी आहार पानी का योग नहीं मिला। भगवान ऋषभ के पुत्र सोमप्रभ के सुपुत्र श्रेयांस ने भगवान को देखा। श्रेयांस की अर्ज पर ध्यान देकर ऋषभ ने शुद्ध प्रासुक दान देख उसी के हाथों से पारणा किया।

देवताओं ने प्रसन्नता व्यक्त कर अहोदानं अहोदानं की ध्वनि की। जन-जन के मन में खुशी का संचार हुआ और लोग अब समझ गये कि ऋषभ को हाथी, घोड़े, हीरे, पन्ने की आवश्यकता नहीं, शरीर चलाने के लिए शुद्ध आहार की आवश्यकता है। भगवान ऋषभ की शारीरिक शांति इस प्रकार की थी कि तेरह महिने दस दिन बिना आहार पानी के निकाल दिये। वर्तमान में दिन में कई बार खाते-पीते भी लोगों को कमजोरी महसूस होती है और ताकत की दवाई भी लेनी पड़ती है, फिर भी हम देखते हैं कि भगवान ऋषभ की तपस्या का स्मरण कर हजारों लोग एक दिन छोड़कर एक दिन आहार कर वर्षीतप की आराधना करते हैं।

भगवान ने तो लंबे समय तक चौविहार तप किया पर वर्तमान में वर्षीतप करने वाले उपवास भी चौविहार कम कर पाते हैं। कई लोग पारणे के दिन रात्रि में पानी आदि ले लेते हैं उन्हें चाहिये कि वर्षीतप की साधना में कम से कम पारणे के दिन भी चौविहार करना चाहिये। इसका प्रारंभ चैत्र कृष्णा अष्टमी को भगवान ऋषभ के दीक्षा दिवस पर किया जाता है और पूर्ण वैशाख शुक्ला तीज को किया जाता है।

इस तप का प्रारंभ तेरापंथ समाज में आचार्यश्री तुलसी के शासन काल में हुआ, गत वर्ष आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में इसकी संख्या सर्वोत्कृष्ट कही जा सकती है। वर्षीतप के इच्छुक भाई बहनों को श्रावक संदेशिका अवश्य देख लेनी चाहिये, उसमें इस तप की व्यवस्थित जानकारी प्राप्त हो सकती है।

पृष्ठ 1 का शेष

महावीर जयंती से अध्यात्म...

भगवान महावीर जन्म कल्याणक हमारी एकता का प्रतीक है। हम सब में सौहार्द, प्रेम का भाव बना रहे। बच्चों में भी अच्छे संस्कार रहें, नशे और मांसाहार से बचे रहें।

पूज्यवर ने आगे फरमाया कि आचार्य श्री तुलसी और आचार्य आनन्द ऋषिजी समकालीन रहे हैं, उनका मिलन भी हुआ था। आचार्य शिवमुनि जी से भी हमारा कई बार मिलना हुआ है। हमारी अहिंसा, संयम और तप की साधना अच्छी चलती रहे। हम अकषाय की साधना करते रहें। कषाय मुक्ति ही मुक्ति का आधार बन सकता है। गुरु अलग-अलग हो सकते हैं, हम अपने गुरु से ज्ञान ग्रहण कर अपनी आत्मा का उद्धार करने का पुरुषार्थ करें।

भगवान महावीर का जीवन काल सुदीर्घ नहीं था, पर थोड़े काल में ही उन्होंने बढ़िया काम कर दिया था। इसलिए वे हमारे लिए स्मरणीय - वंदनीय हो गए। दुनिया में हिंसा, भय की स्थिति दूर हो, मैत्री और अहिंसा की भावना बढ़े। महावीर जयंती से हमें अध्यात्म, अहिंसा, संयम और तप की प्रेरणा मिले, हम आत्मोत्थान की दिशा में आगे बढ़ें, दूसरों की जितनी हो सके आध्यात्मिक सेवा करते रहें।

साध्वीवर्या संबुद्धयशा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भगवान महावीर ने तत्त्व को समझने के लिए अनेकांतवाद का सिद्धांत दिया। एकांत नित्य और एकांत अनित्य दोनों अतिवादों को स्वीकार नहीं किया, नित्यानित्य वाद को स्वीकार किया। संपूर्ण प्रकृति में विरोधी युगलों का सह अस्तित्व होता है। विरोधों के बीच में बैठ कर अविरोध का जीवन जीने का माध्यम है अनेकांत। अनेकांत हमें सिखाता है कि वस्तु में अनंत धर्म होते हैं, एक मुख्य हो जाता है बाकी गौण हो जाते हैं। जो व्यक्ति सापेक्षता के सिद्धांत को समझ लेता है, वह कभी विवाद में नहीं जाता। सम्यक्त्व से सिद्धत्व की ओर प्रस्थान करने का, अनाग्रह की चेतना विकसित करने का आयाम है अनेकांतवाद। हमारे जीवन में महावीर के सिद्धांत उतर जाएंगे तो हम समस्याओं का समाधान प्राप्त कर पाएंगे।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी अपने उद्बोधन में कहा कि भगवान महावीर का जन्म इस धरती के लिए अनुपम अवसर था। वर्तमान हिंसा के वातावरण में भगवान महावीर की अहिंसा ही समाधान का कारण हो सकता है। हम हमारे भाग्य के निर्माता स्वयं ही हैं। भगवान ने कर्मवाद का सिद्धान्त बताया। कर्म के कारण ही सृष्टि में विभक्त भाव है। कर्मवाद सूक्ष्म ज्ञान प्रदान करने वाला है। उन्होंने कर्म को पौद्गालिक माना है। कर्म को व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से परिवर्तित कर सकता है, समय से पूर्व उसकी उदीरणा कर सकता है, उसके स्वभाव में परिवर्तन कर सकता है। जीव की चार मुख्य शक्तियां हैं, ज्ञान, दर्शन, चारित्र और शक्ति। ज्ञान को आवृत्त करने वाला ज्ञानावरणीय कर्म, दर्शन को आवृत्त करने वाला दर्शनावरणीय कर्म, आत्मा के आनंद को बाधित करने वाला मोहनीय कर्म और आत्म शक्ति को प्रतिहत करने वाला अंतराय कर्म होता है। ये चार कर्म आत्मा के गुणों को नष्ट करने वाले हैं, उन पर घात करने वाले हैं इसलिए इन्हें घाती कर्म कहा जाता है। इनके अलावा बाकी जो कर्म हैं नाम, गोत्र, आयुष्य, वेदनीय कर्म। इनका आत्मा से सीधा संबंध नहीं है, शरीर से संबंध है। आत्मा के साथ जब कर्म पुद्गलों का प्रदेश बंध होता है तब आठ रूपों में उसका स्वभाव निर्माण हो जाता है। हर व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र होता है किंतु उन्हें भोगने में स्वतंत्र नहीं होता । हम पाप कर्मों से बचने का प्रयास करने का करें, संवर और निर्जरा से कर्मों को रोक कर आत्मा के शुद्ध स्वरूप को प्राप्त करें। पूज्य गुरुदेव के इंगित अनुसार मुनि योगेशकुमार जी ने भगवान महावीर के दर्शन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि महावीर एक तीर्थंकर ही नहीं एक वैज्ञानिक भी थे। महावीर ने अस्तित्ववाद के बारे में विस्तार से समझाया, उन्होंने नियम को स्वीकार किया नियंता को नहीं। इसी क्रम में मुनि कुमारश्रमण जी ने कहा कि कोई व्यक्ति तभी महान बनता है जब वह युग की समस्या का समाधान करता है। भगवान ने कहा कि मनुष्य जाति एक है, भगवान ने अनेकांत का सिद्धांत स्थापित किया। हम अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत के सिद्धांत को अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करें। कार्यक्रम से पूर्व गुरु गणेश मंडल की बहनों एवं आनंद चालीसा ग्रुप के सदस्यों ने गीत की प्रस्तुति दी। आनन्द जैन पाठशाला के बच्चों ने नशे के दुष्परिणाम पर सुन्दर प्रस्तुति दी।

पूज्यप्रवर के स्वागत में जैन श्रावक संघ जामखेड़ के अध्यक्ष दिलीप भाऊ गुगले, आमदार रामजी शिन्दे, आकाश बाफना, बीड़ महिला मंडल, संभाजीनगर महिला मंडल, मधुकर रालेभर, जामखेड़ महाविद्यालय के प्राचार्य डा. डोंगरे, लोकाशाह पत्रिका के संपादक विजय राज बंब ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

अपने-अपने कर्त्तव्य के प्रति रहें सजग : आचार्य श्री महाश्रमण

चिंचपुर।
20 अप्रैल, 2024

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी आज प्रातः चिंचपुर पधारे। जिला परिषद् विद्यालय में मंगल देशना प्रदान कराते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि जीवन में कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का विवेक होना चाहिये, जिस व्यक्ति में यह विवेक नहीं होता है, वह अनिष्ट के गर्त में गिर सकता है।

आचार्य श्री तुलसी के ग्रन्थ 'कर्त्तव्य षडत्रिंशिका' में बताया गया है कि जो लोग अपने कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य को नहीं जानते हैं, उनका ऐसा अनिष्ट हो सकता है, जिसकी उन्होंने कल्पना भी न की हो। कर्त्तव्य का बोध होना और कर्त्तव्य के प्रति सजग होना, यह आदमी के जीवन की बहुत महत्वपूर्ण बात होती है। माता-पिता का सन्तान के प्रति सांसारिक कर्त्तव्य होता है।

अक्षय तृतीया भगवान ऋषभ की तपस्या की सम्पन्नता से, दान से जुड़ी हुई है। अक्षय तृतीया एक अच्छा दिन माना जाता है। भगवान ऋषभ ने लोगों को सांसारिक ज्ञान भी दिया था। भगवान ने लोगों को सावद्य चीजें भी सिखाई थी। उसके दो कारण हैं- लोकानुकम्पा और कर्त्तव्य।

कर्त्तव्य सावद्य भी हो सकता है और निरवद्य भी हो सकता है। गृहस्थ का अपना कई प्रकार का कर्त्तव्य हो सकता है। साधु का भी अपना कर्त्तव्य होता है। साधु का पहला कर्त्तव्य है अपने साधुत्व की रक्षा करना। फिर दूसरा कर्त्तव्य जनोद्धार का, कल्याण का कार्य हो सकता है। वृद्ध संत हैं तो उनकी सेवा भी करनी चाहिए। कहीं- कहीं स्वाध्याय को गौण कर सेवा देना भी आवश्यक हो सकता है। सेवा महान धर्म है।

सेवा देना कठिन काम भी हो सकता है। सेवा करने वाले को सुनना भी पड़ सकता है, सहन करना भी हो सकता है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

भगवान महावीर के सिद्धान्तों की आज भी प्रासंगिकता : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

दिल्ली।
21 अप्रैल, 2024

भगवान महावीर के 2550 वें निर्वाण महोत्सव का उद्घाटन समारोह महावीर जयंती के पावन अवसर पर प्रगति मैदान के भारत मण्डपम् के विशाल एवं सुरम्य हॉल में प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी की विशिष्ट एवं गरिमामय उपस्थिति में तथा दिगम्बर संप्रदाय के मुनि प्रज्ञसागरजी, स्थानकवासी सम्प्रदाय के उपाध्याय रविन्द्र मुनि जी, तेरापंथ धर्म संघ की साध्वी अणिमाश्रीजी, मंदिरमार्गी संप्रदाय की साध्वी सुलक्षणाजी के सान्निध्य में समायोजित हुआ। जिनशासन की प्रभावना करने वाला यह भव्यातिभव्य कार्यक्रम संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार तथा भगवान महावीर मेमोरियल समिति द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम में संस्कृति राज्य मंत्री अर्जुन मेघवाल एवं मीनाक्षी लेखी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

माननीय प्रधानमंत्री ने कार्यक्रम हॉल में प्रवेश करते ही सबसे पहले मंच पर विराजित साधु-साध्वियों से आशीर्वाद लिया। इसी क्रम में माननीय प्रधानमंत्री साध्वी अणिमाश्रीजी के उपपात में भी पहुंचें जहां साध्वीश्री ने पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमणजी का नाम लेकर उनको आशीर्वाद दिया।

प्रधानमंत्री मोदी ने विशाल जनमेदिनी को जय जिनेन्द्र के संबोधन से सम्बोधित करते हुए कहा, भारत दुनिया के सामने मौजूदा समस्याओं के समाधान में अहिंसा एवं सत्य के मंत्रों को आत्मविश्वास के साथ पेश कर रहा है। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में युद्ध के समय भगवान महावीर की शिक्षाएं और अधिक प्रासंगिक हो गई है। भारत अपने संस्कार व संस्कृति की बदौलत दुनिया में विश्व बंधु के रूप में अपनी पहचान बना रहा है। आज विश्व कई प्रकार के संकट से गुजर रहा है, ऐसे में हमारे तीर्थंकरों की शिक्षाएं और भी महत्वपूर्ण हो गई हैं। उन्होंने कहा आज देश की युवापीढ़ी को यह विश्वास हो गया है कि हमारी पहचान, हमारा स्वाभिमान है। जब राष्ट्र में यह स्वाभिमान का भाव जाग जाता है, तो उसे रोकना असंभव हो जाता है। भारत के लिए आधुनिकता शरीर है पर आध्यात्मिकता उसकी आत्मा है। आचरण में अगर त्याग नहीं है तो बड़े से बड़ा विचार भी विसंगति बन जाता है। यही दृष्टि भगवान महावीर ने हमें सदियों पहले दी थी। समाज में इन मूल्यों को पुनजीर्वित करना समय की मांग है।

प्रधानमंत्री ने आगे कहा- मैं सभी संतो को प्रणाम करता हूँ, उनकी वाणी से मोती प्रकट हो रहे थे। सभी संतों-साध्वियों ने मूलभूत आदर्शों को रखते हुए वर्तमान व्यवस्था में हो रहे एवं करणीय कार्यों को बहुत ही कम समय में अद्भुत तरीके से प्रस्तुत किया, मैं इसके लिए उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, मैं उनके एक-एक शब्द को आशीर्वाद के रूप में हृदय से ग्रहण करता हूँ। इस अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने स्मारक डाक टिकट एवं सिक्का भी जारी किया।

दिगंबर संप्रदाय के मुनि प्रज्ञसागर जी ने कहा कि विश्व में सुख-शांति और आनंद हो, यही जैनधर्म का मूल है। आज पूरी दुनिया को एक का चयन करना है- महावीर या महाविनाश। उन्होंने कहा कि वर्षों पूर्व मेरे गुरु ने एक बात कही थी कि देश में एक चक्रवर्ती आएगा, जो भारत को विश्वगुरु बनाएगा।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

राष्ट्रपति रामचंद्र की उपस्थिति में बुद्ध के देश में मनाया गया महावीर का जन्म कल्याणक

काठमांडु।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या डॉ. समणी ज्योति प्रज्ञा जी एवं डॉ. समणी मानस प्रज्ञा जी के सान्निध्य में महावीर जन्म कल्याणक दिवस का भव्य कार्यक्रम सम्पूर्ण जैन समाज द्वारा मनाया गया। कार्यक्रम में नेपाल के राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल एवं श्रीमती सविता पौडेल की गरिमामयी उपस्थिति प्राप्त हुई। कार्यक्रम में जैन समाज एवं नेपाली समाज के कई लोग उपस्थित थे।

कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल के सुमधुर गीत से हुआ। कन्या मंडल ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ द्वारा रचित - 'जिसकी आज जरूरत' गीतिका की प्रस्तुति दी। महावीर जन्म कल्याणक के अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमणजी, आचार्य श्री पद्मसागर सूरिजी,

आचार्य श्री वसुनन्दी जी तथा श्रमण संघीय प्रवर्तक आशीष मुनिजी का परिषद् को प्राप्त आशीर्वचन का वाचन किया गया। डॉ. समणी ज्योतिप्रज्ञा जी मैत्री का जन्म है। मैत्री के राज्य में पराये व अपने का भेद नहीं रहता। मैत्री का अर्थ है- सबको गले लगाना। समणी जी ने कहा कि Hate करने वाला कभी Great नहीं बन सकता। भगवान ने समता का संदेश दि ने कहा कि भगवान महावीर का जन्म सत्य, प्रेम, या था, उनकी सहिष्णुता अनुपमेय थी। प्रश्न होता है कि उन्होंने इतने कष्टों को कैसे सहन किया? समाधान की भाषा में कहा जा सकता है कि वे ध्यान के कक्ष में प्रविष्ट हो गए थे। फलतः वे बाहरी परिस्थितियों से अप्रभावित रहते थे। डॉ. समणी मानसप्रज्ञा जी ने भगवान महावीर के जीवन को दर्शन के बारे में बताते हुए कहा कि हम भगवान् के पदचिन्हों पर चलकर अपना कल्याण करें, तभी आज का दिन सार्थक होगा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि महामहिम राष्ट्रपति जी के कर कमलों से जिन संसार पत्रिका का भगवान महावीर जन्म कल्याणक विशेषांक एवं नेपाल जैन परिषद द्वारा भगवान महावीर के 2550वें निर्वाण कल्याणक के पावन अवसर पर जारी चाँदी के सिक्के का लोकार्पण किया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक - **दिनेश मरोठी**

संत भीखणजी के जीवन से लें साहस और मनोबल की प्रेरणा : आचार्यश्री महाश्रमण

धानोरा।
17 अप्रैल, 2024

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी धानोरा के जनता विद्यालय प्रांगण में पधारे। तेरापंथ के राम ने फरमाया कि आदमी समता में उपस्थित हो जाता है तो संकल्पों-विकल्पों का प्रणास हो जाता है, जो राग-द्वेषात्मक संकल्प-विकल्प मन में उभरते हैं, उनसे मुक्ति मिल जाती है।

समता की विशिष्ट साधना करने वाले कई मनुष्य दुनिया में हुए हैं। प्रत्येक उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल में भरत और ऐरावत क्षेत्र में 24-24 तीर्थंकर होते हैं। इस जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में वर्तमान अवसर्पिणी काल में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ हुए व अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर हुए। दुनिया में और भी विशिष्ट पुरुष हुए हैं, रामचन्द्रजी भी विशिष्ट पुरुष हुए हैं जिन्हें जैन धर्म में मोक्षगत माना गया है। आज रामनवमी है, कोई-कोई तिथि विशिष्ट पुरुषों के साथ जुड़ जाती है तो वह तिथि गरिमामय स्थान को प्राप्त कर लेती है। कार्तिक अमावस्या भी भगवान महावीर और रामचंद्र जी के साथ जुड़ी हुई है। आज की यह चैत्र शुक्ला नवमी भिक्षु स्वामी के साथ भी जुड़ी हुई है। 264 वर्ष पूर्व आज के दिन संत भीखण जी ने अभिनिष्क्रमण किया था। मारवाड़ का कांठा क्षेत्र भीखण जी के जन्म, प्रथम दीक्षा, अभिनिष्क्रमण और महाप्रयाण के साथ जुड़ा हुआ है। बगड़ी भिक्षु स्वामी का दीक्षा स्थल, अभिनिष्क्रमण स्थल व सांसारिक अवस्था का ससुराल का स्थान भी है।

जीवन में कई स्थितियां आ सकती हैं। कुछ व्यक्ति उन स्थितियों से लाभ उठाने का प्रयास कर लेते हैं। आचार्य भिक्षु के बुद्धि, प्रतिभा का अच्छा क्षयोपशम था, उनकी प्रतिभा विशिष्ट थी। उनका पुरुषार्थ उस क्षयोपशम का उपयोग करने में रहता था। उन्होंने शास्त्राभ्यास भी किया और उन्हें असन्तोष भी हुआ। असन्तोष भी कभी-कभी उत्थान की दिशा में बढ़ाने वाला हो सकता है। विकास में सन्तोष नहीं करना चाहिये। उन्हें लगा कि जिस आम्नाय में मैं हूं वहां का आचार-विचार सन्तोषप्रद नहीं है, इसमें परिष्कार अपेक्षित है। गुरु से सन्तोषजनक चर्चा-वार्ता नहीं होने पर उन्होंने अभिनिष्क्रमण करने का चिंतन किया। भीखणजी स्वामी ने अभिनिष्क्रमण किया तो मानो कठिनाई भी स्वागत करने, सहचर बनने आ गयी।

जैसे भीखण जी स्वामी में बुद्धि का क्षयोपशम अच्छा था, लगता है मनोबल का भी क्षयोपशम उनमें विशिष्ट था। आज का दिन तेरापंथ धर्म संघ के जन्म की पृष्ठभूमि से जुड़ा हुआ है। भिक्षु स्वामी के जीवन से हम साहस-मनोबल की प्रेरणा ले सकते हैं, उनके जैसी निर्मल प्रतिभा हम में भी विकसित हो। तटस्थ, यथार्थ अन्वेषण करने वाली प्रतिभा हो। हम में भी हमारे आराध्य के प्रति, नियमों व यथार्थ के प्रति श्रद्धा और निष्ठा की भावना हो।

पूज्य प्रवर के स्वागत में जनता कॉलेज के वाइस प्रिंसिपल ढोके, सरपंच राजू भाऊ शेलके एवं जय कुमार चानोदिया ने अपने भाव व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शांति और धैर्य से हो सुनने का प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

कड़ा।
18 अप्रैल, 2024

संयम सुमेरू आचार्य श्री महाश्रमण जी आज प्रातः अपनी धवल सेना के साथ श्री अमोलक जैन विद्या प्रसारक मण्डल, कड़ा पधारे।

परम पावन ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि शास्त्र में कहा गया है कि आदमी सुनकर कल्याण को जानता है और पाप को भी जान लेता है। कल्याण और पाप को जानकर जो श्रेय है, उसका समाचरण करना चाहिये।

जानने का एक सक्षम साधन कान होता है। सुनना ज्ञानवर्धन में सहायक होता है। विद्यालयों में अनेक विषय पढ़ाए जाते हैं, इनके साथ अध्यात्म विद्या भी पढ़ाई जाये तो विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार आ सकते हैं।

हमें दो कान और एक मुंह मिला है, मानो यह संदेश दे रहे हैं कि सुनो ज्यादा बोलो कम। हम कानों का बढ़िया उपयोग करें। साधु-संतों के प्रवचन सुनने से हम पापों से बच सकते हैं, हमें अनेक जानकारियां मिल सकती है और कई पुरानी जानकारियां पुष्ट हो सकती हैं। कभी-कभी श्रोता को व्यक्तिगत जीवन की समस्या के समाधान का रास्ता भी मिल सकता है। अच्छे वक्ता साधु को सुनने से श्रोता भी कभी एक अच्छा वक्ता बन सकता है।

शांति और धैर्य के साथ सुनने का प्रयास करें और सुनकर धर्म को जानने का प्रयास करें। सुनते-सुनते वैराग्य भाव भी बढ़ सकता है। भगवान महावीर के पास कितनों ने सुना होगा, गौतम स्वामी जैसे कितने शिष्यों ने सुनकर धर्म को जाना होगा। भगवती सूत्र में गौतम स्वामी के प्रश्न और भगवान महावीर के उत्तर प्राप्त होते हैं, मानो कि भगवती सूत्र ज्ञान का एक सिंधु है ।

आचार्य प्रवर ने प्रसंगवश कहा कि श्री अमोलक ऋषि का नाम मैंने बहुत पहले सुना था। अमोलक ऋषि की बत्तीसी को पढ़कर आगम स्वाध्याय किया जाता था।

पूज्यवर ने आगे कहा कि श्री अमोलक जैन विद्या प्रसारक मंडल ने सौ वर्ष का काल प्राप्त कर लिया है। जो किया, अधिकारी उसका आकलन करे, और आगे क्या धार्मिक सेवा दी जा सकती है उसकी योजना बनाए। सौवें वर्ष के निमित्त से अनेक ठोस कार्य हो सकते हैं। चिन्तन, निर्णय और क्रियान्विति अच्छी हो तो अच्छा कार्य हो सकता है।

पूज्य प्रवर की अभिवन्दना में संस्थान के छात्रों ने प्रार्थना, स्थानीय महिलाओं एवं संस्थान की छात्राओं ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। बालिका सृष्टि दलवी, वाइस प्रिंसिपल जवाहर भंडारी एवं हेमंत पोखरणा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।